कलाकल

2014

आंध्र प्रदेश भू - स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

कलाकल

वार्षिक अंक -2014

संरक्षक	कर्नल एस.श्रीधर राव, निदेशक
संपादक मंडल	श्री के.के.गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक श्री एन.बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक श्रीमती शैलबाला खंडूरी, मानचित्रकार श्री नीलम कुमार, अभिलेखपाल श्रीमती ई.मालिनी,क.हि.अनुवादक
मुद्रण कार्य/कंप्यूट र सेटिंग/ मुख्य पृष्ठ सृजन	श्री बी.एच.राव,अधीक्षक सर्वेक्षक श्री रघुनाथ त्रिपाठी,अधीक्षक सर्वेक्षक श्री आर.वी.रघु, सर्वेक्षण सहायक श्री शैख बादुल्ला, अ. श्रे. लिपिक श्रीमती एस.रजिया बेगम, अ.श्रे.लिपिक

कृपया ध्यान दें : इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं।
यह आवश्यक नहीं कि संपादक इन विचारों एवं दावों से सहमत हो।
पत्रिका बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय /रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	डॉ.स्वर्ण सुब्बा राव भारत के महासर्वेक्षक	
2	संदेश	मेजर जनरल एम- मोहन अपर महासर्वेक्षक	
3	संदेश	कर्नल एस.श्रीधर राव निदेशक	
4	संपादक की कलम से	के.के.गुप्ता अधीक्षक सर्वेक्षक/राजभाषा अधिकारी	
5	वर्ष के दौरान 2014-15 आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने निम्नलिखित परियोजनाओं को लिया है।	------	1
6	हिन्दी एवं टंकण अनुभाग	------	5
7	सर्वेक्षण सहायकों के वेतन मान में पुनरीक्षण- माननीय न्यायालयिक आदेश का कार्यान्वयन	------	6
8	प्रशिक्षण / कोर्स	------	7
9	सम्मेलन / प्रशिक्षण	------	7
10	शिक्षुता	------	7
11	वर्ष 2013-14 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची	------	8
12	पदोन्नत कर्मचारियों की सूची	------	09
13	स्थायीकरण प्राप्त कर्मचारियों की सूची	------	09
14	स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची		11
15	स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची		12
16	सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची	------	13

क्रम संख्या	विषय /रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
17	स्मृति शेष	------	14
18	भंडार का प्रापण	------	15
19	अनुपयोज्य भंडार का अनुपयोगी घोषित		16
20	वर्ष 2013-14 के लिए निधि का आबंटन /व्यय		17
21	मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव		18
22	उच्च न्यायालय में लंबित मामले		20
23	पुनर्विलोकन मामले		20
24	एम ए सी पी के मामले		21
25	आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के अधिकारियों / कर्मचारियों के बच्चे जिन्होंने शैक्षणिक निपुणता दिखाई है।		21
26	तेलुगु में विवृत्त श्रेणी नक्शे (ओ.एस. एम.) की तैयारी	बी.एच.राव, जी.वेणु, एम.राकेश, एस.पेंटा रेडी	22
27	चुनौती के लिए तैयारी	रघुनाथ त्रिपाठी	24
28	नमक का महत्व	कृष्ण कुमार	25
29	मायाजाल	एन. बी.स्वामी	26
30	घाट का पत्थर	बी. बेहेरा	29
31	ज्यादा लोभ न करना	पी. कुन्टिया	31
32	टूटा वृक्ष का अभिमान	चरणदास नारायण गेड़ाम	33
33	बेटी	डी. रवि बाबू	33
34	यह जिंदगी	सैय्यद इद्रीस	34
35	उंगलियों की लड़ाई	शेख महबूब पीरा	35
36	तेलंगाना-भारत का एक और नया राज्य	शैलबाला खंडूरी	36
37	मैं महंगाई	डॉ. नीलम कुमार बिड़ला	37

क्रम संख्या	विषय /रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
38	आतंकी हमला	डॉ. नीलम कुमार बिड़ला	38
39	बाल-श्रम	वाइ.के.राकेश कुमार	39
40	दोस्ती	चिन्ना कोंडय्या	40
41	मेरे जीवन का उद्देश्य	कुमारी श्रिया	41
42	मूर्ख मित्र से समझदार शत्रु अच्छा होता है	मास्टर सनीत	41
43	भविष्य की पढ़ाई	मास्टर शिव कल्याण	42
44	पानी और धूप	कुमारी एस. सानिया	42
45	परीक्षा	कुमारी शेख रजिया सुल्ताना	43
46	राष्ट्रीय साक्षरता	मास्टर शेख समीत	44
47	माँ	मास्टर शेख मेहबूब बाशा	44
48	तितली	कुमारी रिशिका शिवानी	45
49	मेरी कक्षा	कुमारी रिशिका शिवानी	45

डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव
Dr. SWARNA SUBBA RAO

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37,
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड) भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No.-37
Dehradun-248001, (Uttarakhand) India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आंध्र प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, हैदराबाद हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी हिन्दी गृह-पत्रिका 'कलाकल' प्रकाशित कर रहा है ।

मुझे विश्वास है कि हिन्दी के प्रयोग संबंधी संवैधानिक और वैधिक दायित्वों को सही मायने में निभाने के लिये इस तरह की पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रयोग संबंधी वातावरण में एक सकारात्मक बदलाव आयेगा । सब के अंतर्मन में हिन्दी में काम करने की प्रेरणा जाग उठेगी ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों /कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

(डॉ0 स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
ADDL. SURVEYOR GENERAL'S OFFICE
दक्षिणी क्षेत्र/ SOUTHERN ZONE
कोरमंगला, बेंगलूरू/KORAMANGALA BANGALORE

संदेश

किसी भी भाषा के विकास के लिए उसका स्थान जन-मानस में पलना परम आवश्यक है। इस दिशा में आन्ध्र-प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, हर साल की भांति इस साल भी पत्रिका "कलाकल' का प्रकाशन कर एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। राजभाषा प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में यह अत्यन्त सराहनीय प्रयास है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री सुसज्जित होगी तथा इनसे रचनाकारों की प्रतिभा को उजागर करने के साथ-साथ हिन्दी में काम करने का वातारण तैयार करने में भी मदद मिलेगी।

आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका 'कलाकल' सुन्दर रूप में निखर कर सामने आएगी और राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति को पत्रिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

एम. मोहन

मेजर जनरल एम. मोहन
अपर महासर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
निदेशक का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR
आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र
Andhra Pradesh Geo-Spatial Data Centre
उप्पल, हैदराबाद-500 039(ते)
Uppal, Hyderabad- 500 039(T)

निदेशक महोदय की कलम से.............

इस कार्यालय में मेरे कार्यकाल के दौरान, यह गृह पत्रिका “कलाकल” का द्वितीय संस्करण है । प्रथम संस्करण में आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के प्राय: सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य प्रतिभा को देखकर मुझे काफी गर्व महसूस हुआ और एक विचार मन में आया कि यह जी.डी.सी. भी ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्र की तरह हिन्दी में पत्राचार क्यों न करे ।इससे इस भू.स्था.आं.केन्द्र में काम करने वालों को प्रोत्साहन भी मिलेगा और साथ ही साथ राजभाषा प्रचार-प्रसार में गृह मंत्रालय द्वारा जारी संवैधानिक प्रावधान का सम्मान भी बढ़ेगा । मेरी इसी सोच को व्यक्त करने पर, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने काफी प्रोत्साहन दिया और जहां तक हो सके हिन्दी में कार्य करने का पूरा आश्वासन दिया । मैं काफी हर्षोल्लास के साथ यह बताना चाहता हूँ कि उन्हीं के प्रोत्साहन ने मुझे एक अलग “ हिन्दी एवं टंकण अनुभाग “ गठन करने का निर्णय लेने का साहस दिया और उस के बाद जितना हो सके, अधिकतम कोशिश जारी है, कि हिन्दी में ही पत्राचार हो, टिप्पणियाँ भी हिन्दी में ही लिखी जायें । हिन्दीतर भाषा क्षेत्र में हिन्दी का वातावरण बनाने का श्रेय, हमारे सारे अधिकारियों / कर्मचारियों को जाता है। उन्हीं की भावनाओं / सोच का दर्पण ही यह पत्रिका “कलाकल” है, जिन्हें लेख, कविताएं, चुटकुले, कहानी, तकनीकी लेख एवं फील्ड़ कार्य की स्मृतियां आदि के माध्यम से अलंकृत किया गया है और हर रचनाकार मेरी ओर से बधाई का पात्र है । आशा करता हूँ कि यह कलाकल पत्रिका बिना रोक-टोक के इसी गति से निरंतर आगे बढ़ती रहेगी और मैं अपने अंत:करण से कहता हूँ :-

“ हे कलाकल । चिरंजीवी भव:”

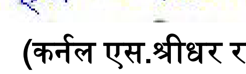

(कर्नल एस.श्रीधर राव)
निदेशक

संपादक की कलम से ---------

"कलाकल" का नूतन अंक आपके कर कमलों में प्रस्तुत है। इस निदेशालय के विकास/ परियोजनाओं की यात्रा की जानकारी एवं निदेशालय के कर्मचारियों की रचनात्मक कृतियों का संग्रह प्रस्तुत है, जिसके माध्यम से विभागीय गतिविधियों का परिचय मिलता है साथ ही कर्मचारियों को अपनी रचनाओं, साहित्यिक गुणों को उजागर करने का अवसर भी प्राप्त होता है।

हिन्दी एक समृद्ध भाषा है जिसको प्रयोग कर तकनीकी ज्ञान को हम सर्व साधारण तक पहुँचा सकते हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य को निरंतर इस निदेशालय की गृह पत्रिका "कलाकल" भली - भांति कर रही है।

"कलाकल" के इस अंक में ज्ञान- विज्ञान की बहुत सी बातों का समावेश कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया है। हमें आशा है कि पत्रिका पाठकों की कसौटी पर खरी उतरेगी तथा उनके लिए ज्ञान-वर्धक सिद्ध होगी। मैं, राजभाषा अधिकारी अपने सहभागियों के प्रति आभारी हूँ जिनके अथक प्रयासों से पत्रिका के प्रकाशन की प्रक्रिया निरंतर जारी है तथा निदेशालय राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रगामी प्रयोग में विकास की ओर तेजी से अग्रसर है।

पत्रिका को अधिक रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए सभी पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

शुभकामनाओं सहित।

के.के.गुप्ता

कल्यान कुमार गुप्ता
अधीक्षक सर्वेक्षक/राजभाषा अधिकारी

वर्ष के दौरान 2014-15 आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने निम्नलिखित परियोजनाओं को लिया है।

क्रम संख्या	परियोजना	अर्जित राजस्व	टिप्पणी
1	आंध्र प्रदेश ट्रांसको, दुंडिगल परियोजना	रु. 2,83,000/-	अतिरिक्त विभागीय । मांगकर्ता से राशि प्राप्त हो चुका है।
2	इंदिरा सागर, पोलावरम परियोजना	रु. 16,75,800/-	अतिरिक्त विभागीय । मांगकर्ता से राशि प्राप्त हो चुका है।
3	बुड़ामीरू प्रमुख नाली सर्वेक्षण	रु. 58,700/-	अतिरिक्त विभागीय । मांगकर्ता से राशि प्राप्त होना बाकी है।
4	गार्ला आरक्षित वन सीमा सर्वेक्षण	रु. 22,10,000/-	अतिरिक्त विभागीय । मांगकर्ता से राशि प्राप्त होना बाकी है।
5	ADRIN उत्पाद का जमीनी सत्यापन	-	विभागीय
6	ग्रेटर हैदराबाद गाइड़ मैप	-	विभागीय
7	समाकलित तटीय क्षेत्र प्रबंध परियोजना त्(ICZM)	-	विभागीय
8	राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली	-	विभागीय
9	आंध्र प्रदेश कर्नाटक सीमा विवाद	-	विभागीय

इसके अलावा, सितम्बर 2013 से अगस्त 2014 तक आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के मानचित्र विक्रय कार्यालय से विभिन्न प्रकार के मानचित्रों के विक्रय द्वारा विभाग को रु.13,36,019/- का राजस्व प्राप्त हुआ।

उपरोक्त परियोजनाओं का सारांश निम्न प्रकार से विवरित है :-

1. <u>आंध्र प्रदेश ट्रांसको, दुंडिगल परियोजना :</u> दुंडिगल स्थित वायुसेना अकादमी के निकट अन्नारम ग्राम होते हुए निकलने वाली आंध्र प्रदेश ट्रांसको की 400 किलो वाट वाली यैद्दुमैलारम – गजवेल डी सी लाइन की 9 बुर्जो. हेतु WGS-84 आधारित जी पी एस स्थानांकों सहित दुंडिगल स्थित वायु सेना आकादमी की हवाई पट्टी की अधःस्पर्श बिंधु (Touch down point) पर आधार तल के हिसाब से मीटर में स्थल ॐचाई समतलों का प्रावधान करना।

ट्रिंबल जी.पी.एस 5700 एवं अंकीय लेवल द्वारा क्षैतिज एवं ऊर्ध्व नियंत्रण का प्रावधान किया गया। सर्वे का कुल मूल्य रू.2,83,000/- था एवं मांगकर्ता से पूर्ण भुगतान प्राप्त कर लिया गया। समय सीमा के अंदर कुल 10 जी. पी. एस बिंदु , 50 कि. मी.की दोहरी तृतीय श्रेणी तलेक्षण (DT Levelling) एवं 15 कि.मी. की मालारेखण (Traversing) कार्य पूर्ण किया गया।

2. **<u>इंदिरा सागर, पोलावरम परियोजना</u>** : आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिला, पोलावरम मंडल की रामय्यापेट ग्राम के पास गोदावरी नदी पर सोची गयी बहुउद्देश्यीय बृहत परियोजना ही इंदिरा सागर, पोलावरम परियोजना है जो पोलावरम परियोजना के नाम से बहुचर्चित है। निम्न उल्लेखित स्थानों में क्षैतिज (डी.जी.पी.एस. की मदद से स्थानांक निश्चित करना)एवं ऊर्ध्व (तल-चिह्नों का सत्यापन) नियंत्रण का प्रावधान करने का मुख्य कार्य था।

i प्रस्तावित 960 मेगावाट जल विद्युत बिजली घर की धुरी ।

ii. मिट्टी एवं पत्थर से निर्मित बांध।

iii. उबड़- खाबड़ मार्ग।

सर्वे कार्य(रेकी एवं सर्वेक्षण) का कुल लागत मूल्य रू.16,75,800/- था और मांगकर्ता से पूरी राशि प्राप्त कर ली गई। एक अधिकारी सर्वेक्षक, दो सर्वेक्षक एवं छः खलासियों की टीम की तैनाती की गई। पूर्ण कार्य हेतु 30 दिनों का समय दिया गया और नियत अवधि के अंदर ही कार्य संपन्न किया गया। कार्य समाप्ति हेतु कुल 17 जी.पी.एस. बिंदु स्थान एवं 200 रेखीय कि. मी. का दोहरी तृतीय श्रेणी तलेक्षण (DT Levelling) का प्रावधान किया गया।

3. **<u>बुड़ामीरू प्रमुख नाली सर्वेक्षण:</u>** बुड़ामीरू प्रमुख नाली सर्वेक्षण , कृष्णा जिले के सिंचाई CADD विभाग के लिए है जो एनिकेपाडु संघ राज्य क्षेत्र से पेद्दा औतुपल्ली के संघ राज्य तक की 25 किलो मीटर की लंबाई की नाली के मापन के सर्वेक्षण के लिए है। सर्वेक्षण के लिए रेकी कार्य पूरा हो गया है । सर्वेक्षण के लिए निर्धारित लागत Rs.58700 / - है। मांगकर्ता से राशि प्राप्त करना अभी बाकी है।

4.**<u>गार्ला आरक्षित वन सीमा सर्वेक्षण :</u>** प्रभागीय वन अधिकारी, कोथागुड़ेम खम्मम जिले के माध्यम से गार्ला आरक्षित वन सीमा सर्वेक्षण कार्य माननीय उच्च न्यायालय, हैदराबाद के आदेश के अनुसार आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र, को आवंटित किया गया है। यह खम्मम जिले में सत्यापन के लिए है। जंगल का क्षेत्रफल 500 वर्ग किलो मीटर है और प्रारंभिक रेकी पूरा कर लिया गया है। सर्वेक्षण कार्य की अनुमानित लागत Rs.22, 10,000 / - है। मांगकर्ता से राशि प्राप्त करना अभी बाकी है।

5. ADRIN उत्पाद का जमीनी सत्यापन : भारत के महासर्वेक्षक द्वारा यह परियोजना कार्य आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र को सौंपा गया था। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य भू निर्देश उत्पादों से संदर्भित आकलन करना है। कुल क्षेत्रफल 18,225 वर्ग किलोमीटर है। रेकी एवं सर्वेक्षण कार्य पूर्ण करने के लिए तीन सप्ताह का समय दिया गया था और दो अधिकारियों/ चार कर्मचारियों को तैनात किया गया था। समय पूर्व ही कार्य पूर्ण कर लिया गया। जी.पी.एस. द्वारा 51 जी.सी.पी. बिंदु स्थानों का प्रावधान किया गया।

6. ग्रेटर हैदराबाद गाइड़ मैप: ग्रेटर हैदराबाद गाइड़ मैप का कार्य आठ खन्डों में पूर्ण कर लिया गया है।

7. समाकलित तटीय क्षेत्र प्रबंध परियोजना (ICZM) : केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अंतर्गत, समाकलित तटीय प्रबंध समिति (SICOM) द्वारा इस परियोजना को लिया गया है।

परियोजना का उद्देश्य:-

डेल्टा क्षेत्रों को छोड़ 7 कि.मी. की चौड़ाई के साथ कन्याकुमारी से बंगलादेश सीमा तक भारतीय तट रेखा के पार्श्व में 2400 कि.मी. की तय दूरी का 1:10000 के पैमाने पर मानचित्र बनाना। पूर्वी तट के कुल क्षेत्र को फिर चार क्षेत्रों में क्षेत्र – 5,6,7 एवं 8 के नाम से विभाजन किया गया। अपने आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र के कार्य क्षेत्र में क्षेत्र 6 एवं क्षेत्र 7 पड़ता है। क्षेत्र 6 में पड़ने वाले

क्षेत्र को 8 उप-खण्डों में एवं क्षेत्र 7 में पड़ने वाले क्षेत्र को 12 उप-खण्डों में पुनः विभाजित किया गया। कुल कार्य को मेसर्स जियोडीस, आइ.आइ.सी. टेक्नोलोजिस एवं इन्फोसिस को ठेके पर दिया गया।

मेसर्स जियोडीस का उत्पादन केन्द्र, हैदराबाद स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग के भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान के भवन में स्थित है जिसका उत्तरदायित्व क्षेत्र, क्षेत्र-6 एवं 7 है जो आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र के कार्य क्षेत्र में है।

ठेकेदारी की शर्तों के अनुसार, आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने नियंत्रित सर्वेक्षण कार्य संपूर्ण कर दिया है जैसे 10 से 50 कि. मी. की दूरी पर जी. सी. पी. एवं 1 से 3 कि. मी. की दूरी पर तल-चिह्नों मेसर्स जियोडीस के प्रावधान हेतु ।

अब तक क्षेत्र 6 में 8 उप- खंडों में से 7 उप-खंडों में स्थित और क्षेत्र 7 में 12 उप- खंडों में से 11 उप-खंडों में स्थित 10 से 50 कि. मी. की दूरी पर जी. सी. पी. एवं 1 से 3 कि. मी. की दूरी पर तल-चिह्नों का वर्णन, रेखाचित्र एवं समतलीय स्थानांक आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने प्रस्तुत कर दिया हैं।

चूँकि दोनों क्षेत्रों के कुछ उप-खंडों में रिक्त स्थान पाया गया है, आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने मोगलतूरू एवं मछलीपट्टनम उप-खंडों के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु पुनःसर्वेक्षण कार्य कर दिया है। इस दौरान कुल 181 कि.मी. का दोहरी तृतीय श्रेणी तलेक्षण (DT Levelling) करते हुए 17 जी .पी.एस. बिंदु

स्थान का प्रावधान किया गया । तथापि, रिक्त स्थान में पड़ने वाले क्षेत्र 6 के 3 उप- खंडों और क्षेत्र 7 के 2 उप- खंडों का सर्वेक्षण कार्य, अपर महासर्वेक्षक, दक्षिणी क्षेत्र एवं परियोजना निदेशक , आइ सी जेड़ एम से प्रशासनिक एवं वित्तीय अनुमति प्राप्त होने पर कर दिया जाएगा ।

मेसर्स जियोडीस ने हवाई त्रिकोणीयकरण हेतु नेल्लूरू उप- खंड का नियंत्रण विस्तार करने के लिए फील्ड सर्वेक्षण कार्य समाप्त कर दिया है। इस विस्तृत नियंत्रण को आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र द्वारा अनुमोदित किया जाना है ।

समस्त उप-खंडों का हवाई त्रिकोणीयकरण एवं अंकीयकरण के पश्चात मेसर्स जियोडीस, आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र को अनुमोदन हेतु सारी अंतिम प्राप्तियां प्रस्तुत करेगा ।

आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र द्वारा अंतिम अनुमोदन के पश्चात 20 उप-खंडों में पड़ने वाले सारे नक्शों का मुद्रण किया जाएगा । यह प्रक्रिया दिसंबर 2015 तक समाप्त होना है ।

8. <u>राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली (NUIS)</u> : राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली का प्रमोचन, केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय द्वारा 152 शहरों का 1:10000 के पैमाने पर उपग्रह छाया चित्र द्वारा एवं 1:2000 के पैमाने पर हवाई चित्र द्वारा दसवीं योजना के तहत भू स्थानिक आंकड़ों का विकास करने के साथ – साथ जी.पी.आर (Ground Penetrating Radar) की मदद से 22 शहरों का 1:1000 के पैमाने पर दो उपयोगों के समाधान हेतु जैसे जल आपूर्ति, मल-निर्यास उपयोगिता मानचित्रण हेतु किया गया । राज्य नोडल एजेंसियों (SNAs) द्वारा शहरी मास्टर प्लान और उपयोगिता प्लान की तैयारी हेतु इन नक्शों का उपयोग किया जाएगा ।

उपरोक्त परियोजना के लिए आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ों केंद्र का उत्तरदायित्व निम्नानुसार हैं:-

i. एन.आर.एस.सी द्वारा 1:10000 पैमाने पर उत्पादन किया गया नक्शों की सुरक्षा निकासी ।

ii. अंतिम नक्शों के संशोधन और गुणवत्ता जाँच हेतु एन. आर. एस.सी के साथ समन्वय ।

iii.1:10000 के पैमाने पर तैयार नक्शों को राज्य नोडल एजेंसियों (SNAs) को देय हेतु अन्य भू स्थानिक आंकड़ा केंद्रों के साथ समन्वय ।

इस राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली परियोजना के अंतर्गत 20 राज्यों के 152 शहरों का कार्य लिया गया और 68 शहरों की अंतिम प्राप्तियां उक्त भू स्थानिक आंकड़ा केंद्रों / राज्य नोडल एजेंसियों (SNAs) को भेज दिया गया । फिलहाल एट्रिब्यूट आंकड़ा जोड़ने हेतु अलग- अलग राज्यों के उक्त भू स्थानिक आंकड़ा केंद्रों / राज्य नोडल एजेंसियों (SNAs) से प्राप्त 15 शहरों का एवं एम.ओ.जी.एस.जी.एस. संशोधन करने हेतु 2 शहरों का आंकड़ा एन.आर.एस.सी के पास है। अलग- अलग राज्यों के 67 शहरों के आंकड़े, एट्रिब्यूट संग्रहण हेतु उक्त भू स्थानिक आंकड़ा केंद्रों / राज्य नोडल एजेंसियों (SNAs) के पास है ।

तथापि आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने एन.आर.एस.सी एवं अन्य भू स्थानिक आंकड़ा केंद्रों राज्य नोडल एजेंसियों (SNAs)से अच्छे समन्वय के साथ अपना उत्तरदायित्व भरपूर निभाया है।

9. <u>आंध्र प्रदेश कर्नाटक सीमा विवाद</u> : माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुसार, आंध्र प्रदेश कर्नाटक राज्य सीमा विवाद को सुलझाने हेतु भारत के महासर्वेक्षक ने आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ों केंद्र को कार्य आवंटन किया। इसका मुख्य उद्देश्य आंध्र प्रदेश कर्नाटक राज्य सीमा विवाद को सुलझाने हेतु सीमा स्तम्भों का स्थापना करना है। तीन खंडों में रेकी एवं सर्वे कार्य हेतु टीमों की तैनाती की गयी। अब तक 172 जी.पी.एस. बिन्दुओं का पर्यवेक्षण किया गया। कार्य अभी बाकी है।

10. <u>अन्य विविध कार्य :</u> उपरोक्त परियोजना कार्यों के अलावा, इस भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने वर्ष 2014-15 के लिए निम्नलिखित कार्यों की जिम्मेदारी ली है।

I. 28 शीटों की 1:50,000 के पैमाने पर गुणवत्ता नियंत्रण।
II. 516 शीटों की 1:25000 के पैमाने पर ओ.एस.एम. रूपान्तरण।
III. 1:50,000 के पैमाने पर 354 शीटों की वेब फीचर सेवा।
IV. हैदराबाद क्षेत्र में पड़ने वाली 56 के / 6, 7, 10,11 डी. एस. एम. शीटों का अद्यतन।
V. हैदराबाद क्षेत्र मे पड़ने वाली 56 के / 6, 7, 10,11 ओ. एस. एम. शीटों का अद्यतन।
VI. 1:50,000 के पैमाने पर तेलुगु भाषा में चार शीटों का मानचित्रण।
VII. तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्यों का नक्शा 1:10 लाख के पैमाने पर तैयार करना।

<u>हिन्दी एवं टंकण अनुभाग</u>

22 मई 2014 को आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने एक नये अनुभाग का गठन किया, जिसका नाम "**<u>हिन्दी एवं टंकण अनुभाग</u>**" रखा गया। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार, इस निदेशालय से अधिकतम पत्राचार हिंदी में ही करना। इसके प्रभारी , इस आंकड़ा केंद्र के राजभाषा अधिकारी हैं एवं इस अनुभाग में **ए**क अनुभाग अधिकारी, एक कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, दो अवर श्रेणी लिपिकों की तैनाती की गई है। निदेशक द्वारा अनुमोदित मसौदे को हिंदी में अनुवाद कर इस निदेशालय से अन्य निदेशालयों, क्षेत्रों एवं महासर्वेक्षक के कार्यालय को पत्राचार किया जाता है।'ग' क्षेत्र में हिंदी पत्राचार का लक्ष्य जो 55% है उसे प्राप्त करने हेतु यह निदेशालय अहम भूमिका निभा रहा है। कोशिश जारी है कि वर्ष 2014-15 तक वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार यह निदेशालय अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

<u>सर्वेक्षण सहायकों के वेतन मान में पुनरीक्षण- माननीय न्यायालयिक आदेश का कार्यान्वयन</u>

अप्रैल 2013 में सर्वेक्षण सहायकों के वेतन मान में पुनरीक्षण का आदेश प्राप्त हुआ। सर्वेक्षण सहायक की हैसियत से जिनको ए सी पी / नियमित पदोन्नति मिली उनके मामलों को तुरंत लिया गया । तथापि, एक संदेह उठा कि क्या उच्च वेतन-मान, एम.ए.सी.पी प्राप्त सर्वेक्षण सहायक पर लागू किया जा सकता है या नहीं और इस पर भारत के महासर्वेक्षक से स्पष्टीकरण प्राप्त किया गया । इसी बीच सर्वेक्षण सहायक के वेतन मान के पुनरीक्षण के समाधान हेतु निम्नलिखित सदस्यों की समिति का गठन किया गया ।

1. श्री के.के गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक (अध्यक्ष)
2. श्री एल.एस. शंकर राव, कार्यालय अधीक्षक
3. श्री. एम. यादी रेड्डी, सहायक
4. श्री.पी. सतीश, सहायक

इन मामलों के संसाधन के लिए नियमित आधार पर बैठकें आयोजित की गई । मामले, जिनके स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं थी (लगभग 25) तुरंत लिये गये एवं जुलाई 2013 में क्षेत्रीय वेतन एवं लेखा कार्यालय को प्रस्तुत किये गये जिन्हें उसी महीने में जाँच/ तय किया गया ।

फरवरी 2014 में सर्वेक्षण सहायकों के वेतन मान के पुनरीक्षण से संबंधित स्पष्टीकरण की प्राप्ति के बाद बाकी के 45 मामलों को (दोनों पूर्व – 2006 एवं उत्तर - 2006 ए.सी.पी) निर्देशों के अनुसार, मामलों को 15-03-2014 तक तैयार किया गया । तथापि, वित्तीय वर्ष 2013-14 के अंत में निधि की उपलब्धि न होने के कारण, इसको क्षेत्रीय वेतन एवं लेखा कार्यालय को प्रस्तुत नहीं किया जा सका ।

वर्ष 2014 -15 लेखानुदान के माध्यम से प्राप्त निधि से (12 सेवा निवृत्त मामलों को जुलाई 2014 में प्रस्तुत किया गया और उसी महीने में तय किया गया) । जुलाई 2014 में नियमित बजट के आंबटन के बाद बाकी के सभी मामलों को अर्थात् 10 (लगभग), अगस्त 2014 में प्रस्तुत किया गया और उसी महीने में तय किया गया । आज की तारीख में सभी मामलों को पूर्ण कर लिया गया और अनुदेशों का अनुपालन किया गया । 70 मामलों में से 22(लगभग) को आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ और बाकी (पूर्व -2006) मामलों को सैद्धांतिक तौर पर वेतन नियतन किया गया अर्थात् माननीय न्यायायिक आदेश के अनुसार बकाया के आहरण के बिना ।

समिति की नियमित आधार पर बैठकें हुई और अध्यक्ष ने मामले को पूर्ण करने में मार्गदर्शन दिया । श्री एल.एस. शंकर राव, कार्यालय अधीक्षक ने अन्य सदस्यों द्वारा किए गए वेतन नियतन मामलों की पर्यवेक्षण और जाँच की । समिति द्वारा दिए गए समय सीमा के अंदर सभी मामलों को पूर्ण किया गया और समय समय पर निदेशक को स्थिति से अवगत करवाया गया ।

प्रशिक्षण / कोर्स

आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र से निम्नलिखित अधिकारियों को भारतीय सर्वेक्षण संस्थान में विभिन्न कोर्सो में प्रशिक्षण दिलवाया गया।

क्रम सं	अधिकारी का नाम(श्री/श्रीमती)	कोर्स संख्या	विषय
1	मो.अजीम्मुद्दीन	495.21	सर्वेक्षण अभियांत्रिकी का मूल सिद्धान्त
2	एन. अनिल कुमार	क्यू 5	भूमि सूचना का अभिकल्प एवं कार्यान्वयन
3	मोहम्मद अली शेख	400.92(ए)	सर्वेक्षण पर्यवेक्षक
4	एस. रवि	400.92(ए)	सर्वेक्षण पर्यवेक्षक
5	अमित सुमर	400.92	सर्वेक्षण पर्यवेक्षक
6	एल.वी.एम. नायडु	400.92(बी)	सर्वेक्षण पर्यवेक्षक
7	वी. गोपाल राव	400.92(बी)	सर्वेक्षण पर्यवेक्षक
8	बी. गोपाल राव	400.92(बी)	सर्वेक्षण पर्यवेक्षक
9	पी. रविकिरण	स्नातकोत्तर	भू-स्थानिक विज्ञान
10	कोत्ता श्रीनिवास	स्नातकोत्तर	भू-स्थानिक विज्ञान

सम्मेलन / प्रशिक्षण

1. कर्नल एस. श्रीधर राव, निदेशक ने बेंगुलूरु स्थित दक्षिणी क्षेत्र कार्यालय में 21.01.2014 से 23.01.2014 आइ.सी.जेड.एम. परियोजना से संबंधित निदेशकों के सम्मेलन में हिस्सा लिया।
2. कर्नल एस. श्रीधर राव, निदेशक ने नई दिल्ली स्थित सर्वे (हवाई) एवं दिल्ली भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र निदेशालय में राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली (NUIS) से संबंधित पुनरीक्षण बैठक में हिस्सा लिया।
3. श्री के.के. गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक एन.एस.डी.आई के लिए ओरेकल स्पेशियल का प्रशिक्षण प्राप्त किया|

शिक्षुता

आंध्र विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज(ए), विशाखपट्टनम के 12 विद्यार्थियों को 12-05-2014 से 06-06-2014 तक जियोडेसी, अंकीय फोटोग्रामिति, स्थलाकृति, सुदूर संवेदन, तलेक्षण, अंकीय मानचित्रण एवं भौगोलिक सूचना पद्धति आदि विषयों पर जानकारी दी गयी।

वर्ष 2013-14 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम
1	पी. प्रेम कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक
2	पी.के.कर	अधिकारी सर्वेक्षक
3	एल.के.फरासी	अधिकारी सर्वेक्षक
4	ए. भट्टाचारजी	अधिकारी सर्वेक्षक
5	एन. अनिल कुमार	सर्वेक्षक
6	श्रीनीवास राव यादगिरि	सर्वेक्षक
7	के. ओमकार स्वामी	सर्वेक्षक
8	सागरिका पैताल	सर्वेक्षक
9	एम.एस. आर. मूर्ति	सर्वेक्षक
10	एस. बी. चक्रधर राव	सर्वेक्षक
11	अश्फाख अहमद	सर्वेक्षक
12	डी. वेंकटा श्रीहरी	सर्वेक्षक
13	डी.आर.एस. प्रसन्न कुमार	सर्वेक्षक सहायक
14	सी. एच. गेडम	मानचित्रकार ग्रेड II
15	विजय सुनीता गोपु	मानचित्रकार ग्रेड II
16	पी.के प्रतिभा	सहायक
17	जे. कनक लक्ष्मी	मानचित्रकार ग्रेड III
18	शैलबाला खंडूरी	मानचित्रकार ग्रेड III
19	ए. शैलेश	प्रवर श्रेणी लिपिक
20	एम. बंगारी नायडू	प्रवर श्रेणी लिपिक
21	चंद्रपाल	प्रवर श्रेणी लिपिक
22	एम.लक्ष्मण कुमार	प्रवर श्रेणी लिपिक
23	एन. वल्ली कल्याणी	प्रवर श्रेणी लिपिक
24	बी.नागरत्नम	अवर श्रेणी लिपिक
25	पठान इमाम कासीम	अवर श्रेणी लिपिक
26	एम.अप्पल राजु	एम टी डी
27	सय्यद जहांगीर अली	एम टी डी
28	श्यामल दास	एम टी डी

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम
29	सी. नारायना	खलासी
30	महेन्द्र कुमार	खलासी
31	एम.ओबय्या	खलासी
32	सी. वी.चलमैय्या	खलासी
33	कालेश्वर	खलासी
34	जी. जयन्ना	खलासी
35	के. अप्पा राव	खलासी
36	पी. प्रकाशम	खलासी
37	के. ईश्वरय्या	खलासी

पदोन्नत कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि	जिस पद पर पदोन्नत हुए
1	डी.रघु रामुलु	मानचित्रकार डिविजन -I	11-10-2013	मुख्य मानचित्रकार
2	मो. अजीमुद्दीन	सर्वेक्षक	06.12.2013	अधिकारी सर्वेक्षक
3	एम. परमेश्वर राव	सहायक	29.11.2013	कार्यालय अधीक्षक
4	जी.शीला रानी	मानचित्रकार डिविजन -II	23.06.2014	मानचित्रकार डिविजन –I
5	एम. वासुदेव	प्रवर श्रेणी लिपिक	06.05.2014	सहायक

स्थायीकरण प्राप्त कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम	पदनाम	स्थायीकरण की तिथि
1	एम.विजय कुमार	पटल चित्रकार ग्रेड़ -III	01.01.2013
2	आर. श्रीनीवास राव	अवर श्रेणी लिपिक	01.01.2013

क्रम सं	नाम	पदनाम	स्थायीकरण की तिथि
3	पी. मिलिन्द कुमार	खलासी	01.01.2013
4	गनथर्कोली पैदम्मा	खलासी	01.01.2013
5	वाइ. मानीक्यम्मा	खलासी	01.01.2014
6	बी. स्वामी(अनुसूचित जन जाति)	खलासी	01.01.2014
7	बी. शांता (अनुसूचित जन जाति)	खलासी	01.01.2014

स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/ श्रीमती	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	डी.रघु रामुलु	मानचित्रकार	11.10.2013	भौ. सू.प. एवं सु. सं. निदेशालय	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
2	मो. अजीमुद्दीन	सर्वेक्षक	06.11.2013 (पूर्वाह्न)	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
3	सत्यभामा नायक	स्थापना एवं लेखा अधिकारी	10.01.2014 (पूर्वाह्न)	प.बं. एवं सि. भू.स्था. आं. केंद्र, कोल्काता	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
4	एन.बी. सूरी	अधीक्षक सर्वेक्षक	22.01.2014	म.एवं गोवा निदेशालय, पुने	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
5	एस. मेहबूब	दफादार	17.02.2014 (अपराह्न)	म.एवं गोवा निदेशालय, हैदराबाद स्कन्ध	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
6	टी.कृष्ण कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	19.03.2014 (अपराह्न)	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
7	एस.रवि	टी.टी.टी. 'ए'	17.04.2014 पूर्वाह्न	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
8	अमित कुमार	टी.टी.टी. 'ए'	06.05.2014 पूर्वाह्न	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
9	बी.राजन बाबू	सहायक	09.06.2014 पूर्वाह्न	दक्षिणी मुद्रण वर्ग	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
10	जी. शीला रानी	मानचित्रकार डि-I	23.06.2014 पूर्वाह्न	भौ. सू.प. एवं सु. सं. निदेशालय, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद

स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	बी.सी.साहु	अधिकारी सर्वेक्षक	16.08.2013	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भा. स. एवं प्र. सं, हैदराबाद
2	एम.एम. मोहन्ति	अधिकारी सर्वेक्षक	26.08.2013	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	ओड़ीशा. भू.स्था. आं. केंद्र, भुवनेश्वर
3	पी.यादय्या	सर्वेक्षक	11.12.2013 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	क. भू.स्था. आं. केंद्र,बेंगुलूरु
4	सुनीता कालरा	आशुलिपिक	28.04.2014 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	निदेशक, सर्वेक्षण (हवाई) दिल्ली . भू.स्था. आं. केद्र, नई दिल्ली
5	शुभा वी. नायर	कार्यालय अधीक्षक	07.05.2014 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भा. स. एवं प्र. सं, हैदराबाद हैदराबाद
6	के.वी चारी	सहायक	06.06.2014 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	दक्षिणी मुद्रण वर्ग

सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1	पी.डी.कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	30.09.2013	सेवा निवृत्त
2	एस. प्रकासम	दफादार	30.09.2013	सेवा निवृत्त
3	भूलनराम	खलासी	15.10.2013 (पूर्वाह्न)	स्वैच्छिक सेवा नेवृत्त
4	जी. लाजर	पटल चित्रकार ग्रेड़- II	31.10.2013	सेवा निवृत्त
5	बी.सीलम्मा	खलासी	31.10.2013	सेवा निवृत्त
6	पी.देवदास	मानचित्रण मॉउंटर	30.11.2013	सेवा निवृत्त
7	तुनुगुंट्ला राधा कृष्णा	भंडार सहायक	31.12.2013	सेवा निवृत्त
8	टी.वेंकटय्या	दफादार	31.12.2013	सेवा निवृत्त
9	जी. चेन्नैय्या	माली	31.12.2013	सेवा निवृत्त
10	पी.सी.बोरोले	अधिकारी सर्वेक्षक	28.02.2014	सेवा निवृत्त
11	डी.रघु रामुलु	मुख्य मानचित्रकार	28.02.2014	सेवा निवृत्त
12	बी. नासरय्या	खलासी	28.02.2014	सेवा निवृत्त
13	बी. थीरूपाल	दफादार	31.03.2014	सेवा निवृत्त
14	के. दानम	खलासी	30.04.2014	सेवा निवृत्त
15	कृष्णा सरकार	अभिलेखपाल डि.I	31.05.2014	सेवा निवृत्त
16	के.पुल्लय्या	पटल चित्रकार ग्रेड़ II	31-05-2014	सेवा निवृत्त
17	सी.कोंडय्या	जमादार	31.05.2014	सेवा निवृत्त
18	एम.वेंकटेश्वरलु	दफ्तरी	30.06.2014	सेवा निवृत्त
19	पी.अर्जुना	खलासी	30.06.2014	सेवा निवृत्त
20	यावर बेगम	खलासी	30.06.2014	सेवा निवृत्त
21	एम.चिन्ना वेंकटम्मा	दफ्तरी	30.06.2014	सेवा निवृत्त
22	एन.बी. सूरी	अधीक्षक सर्वेक्षक	31.08.2014	सेवा निवृत्त

स्मृति शेष

एस.पी. ईश्वरैय्या, खलासी

जन्म तिथि	:	01-07-59
विभाग में भर्ती होने की तिथि	:	01-03-1997 से नियमित भर्ती
स्वर्गवास	:	22-4-2014
परिवार	:	इनके परिवार में पत्नी के अलावा दो बच्चे हैं।

इनके आकस्मिक निधन पर आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के कर्मचारियों को गहरा आघात पहुँचा और सभी ने इनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की एवं इनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए दो मिनट का मौन रखा।

स्व. श्री एस.पेद्दा ईश्वरय्या जिनकी आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र में कार्यरत रहते हुए अप्रैल 2014 में अकाल मृत्यु हो गयी थी, उनके परिवार की तत्काल मदद के लिए पूरे आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के परिवार ने रू 25,600/- का तत्काल सहयोग दिया।

भंडार का प्रापण

क्रम सं	सामग्री	भंडार
1.	वाटर कूलर	01
2.	एल ई.डी मॉनीटर	15
3.	कम्प्यूटर टेबुल	30
4.	कम्प्यूटर कुर्सी	30
5.	प्लास्टिक कुर्सी	236
6.	एच.पी.डिजाइन जेट टी- 1300 प्रिंटर	01 आइ. सी जेड एम के अंतर्गत
7.	कलर ट्रेक स्मार्ट एल.एफ जी.एस. टी 42- स्कैनर	01 आइ. सी जेड एम के अंतर्गत
8.	यु.पी.एस. के लिए 12 वोल्ट की बैटरी	60
9.	5 के.पी. का यू पी एस	02 डी ए डब्ल्यु वी आइ. सी जेड एम के अंतर्गत
10.	डेल्ल कम्प्यूटर	10
11.	लाइका अंकीय लेवल (डी. एन.ए-03)	02 आइ. सी जेड एम के अंतर्गत
12.	लाइका जी.एन.एस.एस (जी.पी.एस दोहरी बारंबारिता)	02 आइ. सी जेड एम के अंतर्गत
13.	3 डी विजन किट	23 (18 आं. प्र. भू. स्था. आं. केंद्र हेतु)
14.	सैमसंग एल.सी. डी. मॉनिटर	02
15.	एच.पी. स्कैनजेट 200 फ्लैटटेड- स्कैनर	01
16.	डाट मैट्रिक्स प्रिंटर	03

अनुपयोज्य भंडार का अनुपयोगी घोषित

क्रम सं	सामग्री	मूल्य
1.	स्क्राइबिंग उपकरण	रू.3,64,574/-
2.	फर्नीचर आइटम	रू.2,18,844/-
3.	फोटोग्रामीतीय उपकरण	रू.91,25,746/-
4.	कम्प्यूटर और परिधीय	रू.40,27,273/-
5.	उपकरण (गौण सर्वेक्षण उपकरण)	रू.7,06,943/-

तदनुसार, अनुपयोज्य भंडार की अनुपयोगी हेतु नीलामी प्रक्रिया की शुरुआत हो चुकी है ।

वर्ष 2013-14 के लिए निधि का आबंटन / व्यय

शीर्ष	स्वीकृत अनुदान (हजारों में)	अतिरिक्त निधि की माँग/प्राप्ति (हजारों में)	भा.के.म.सर्वे. द्वारा काटी गई (हजारों में)	इस कार्यालय द्वारा अभ्यर्पण	अंतिम बजट अंक (रूपयों में)	व्यय (रूपयों में)	31-3-2014 को शेष राशि (रूपयों में)
वेतन	114400	0	1400	0	113000000	112999869	131
मजदूरी	500	350	0	0	850000	845802	4198
ओ टी ए	0	0	0	0	0	0	0
चिकित्सीय	2840	0	0	750	2090000	2089187	813
डी टी ई	1240	0	0	0	1240000	1239231	769
ओ ई	1409	125	94		1440000	1397157	2843
आर आर.टी	240	0	0	16	224000	223875	125
ओ ई.ए	2	2	0	0	4000	3750	250
एस&एम	310	0	0		310000	309712	288
पी सेवा	280	0	0	129	151000	149810	1190
अनुदान	0	0	0		20800	20775	25

मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव – 2013

आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र निदेशालय के मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव दिनांक 10-01-2014 को प्रातः काल 10.00 बजे से सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि भारत के महासर्वेक्षक डॉ. स्वर्ण सुब्बा राव उपस्थित थे। विशेष अतिथि के रूप में श्री एस.बी. शर्मा, उप महासर्वेक्षक, भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान उपस्थित थे। निदेशक महोदय कर्नल श्रीधर राव ने स्वागत भाषण दिया और मनोरंजन क्लब के सचिव श्री डी.आर.एस. प्रसन्न कुमार ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा सभी का मनोरंजन किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि इस निदेशालय ने श्री कर्नल श्रीधर राव के नेतृत्व में बहुत अधिक एवं संतोषजनक रूप से प्रगति की है और इस बात का भी उल्लेख किया कि वे जब इस निदेशालय के निदेशक थे, तब वे ये सब कार्य करना चाहते थे परंतु इन्हें मूर्त रूप देने में कर्नल श्रीधर राव, निदेशक महोदय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। तत्पश्चात एक प्रीति- भोज का आयोजन किया जिसमें करीब 230 लोगों ने भाग लिया जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित किए गए खेल

कैरम	टेबुल टेनीस	शटल	शतरंज	शॉट- पुट	धीमी साइकिलिंग
पुरुष सिंगल्स महिला सिंगल्स पुरुष डबल्स महिला डबल्स	पुरुष सिंगल्स पुरुष डबल्स	पुरुष सिंगल्स महिला सिंगल्स पुरुष डबल्स महिला डबल्स	पुरुष	पुरुष	पुरुष

वर्ष 2013 के दौरान केन्द्रीय मनोरंजन कलब स्पोर्टस से प्राप्त इस निदेशालय के प्रतिष्ठा एवं सम्मान

कैरम			
खेल	**प्रथम पुरस्कार**	**द्वितीय पुरस्कार**	**तृतीय पुरस्कार**
पुरुष सिंगल्स	पी. रवी कान्त	चन्द्रपाल	शशी किरन एवं एल.ए. बेग
महिला सिंगल्स	शुभा वी. नायर	पी.के. प्रतिभा	शैलजा एवं मीना
पुरुष डबल्स	सैय्यद इदरिस एवं सुवार्तय्या	के.वी. चारी एवं ओ. प्रवीन कुमार	---------
महिला डबल्स	शुभा वी. नायर एवं अनुसूया	पी.के. प्रतिभा एवं शैलबाला खंडूरी	
टेबुल टेनीस			
पुरुष सिंगल्स	पी. सतीश	के. वी.चारी	ओ. प्रवीन कुमार एवं अशफाख अहमद
पुरुष डबल्स	के.वी.चारी एवं डी. रंगा राव	के.के. गुप्ता एवं पी. सतीश	----------
शटल			
पुरुष सिंगल्स	पी. सतीश	एम. वी. विजय कुमार	के.वी चारी एवं पी. यादय्या
महिला डबल्स	शुभा वी. नायर	एम. सबीता	मीना एवं रज़िया बेगम
पुरुष डबल्स	पी. सतीश एवं एम. वासुदेव	प्रसन्न कुमार एवं ओ. प्रवीन कुमार	-----------
महिला डबल्स	एम. सबीता एवं रजिया बेगम	शुभा वी. नायर एवं बी. एस. वी. वरलक्ष्मी	-----------
शतरंज			
पुरुष	जगन	ए.के.रथ	------------
शॉट- पुट			
पुरुष	बी. नागरत्नम	चन्द्रपाल	प्रसन्न कुमार

धीमी साइकिलिंग			
पुरुष	डी. प्रसन्न कुमार	सैय्यद इदरिस	सय्यद मोज़्ज़म

उच्च न्यायलय में लंबित न्यायलिक मामले

आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

लंबित मामले 04

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण, हैदराबाद

केसों की संख्या 11

समाप्त केसों की संख्या 06

लंबित केसों की संख्या 05

पुनर्विलोकन मामले

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों के पुनर्विलोकन मामलों का निपटारा किया जा चुका है ।

क्रम सं	ग्रूप 'बी' राजपत्रित	ग्रूप 'बी' अराजपत्रित	ग्रूप 'सी' (पूर्ववर्ती ग्रुप
1	एस. बाबू, अधिकारी सर्वे.	जे. डी. एबनेजर, मानचित्रकार, डिवि. I	नरेश
2		पी.के. लुहा, मानचित्रकार, डिवि. I	गेंदो राम
3		शेख मीरावली, मानचित्रकार, डिवि. I	एम. गुर्रय्या
4		जी. सीतारामम, सर्वे. सहायक	पी. प्रकाशम
5		वाई. सुब्बय्या, सर्वे. सहायक	सत्यम्मा
6		पी.एस. सामबाबू, सर्वे. सहायक	वी. कृष्णय्या
7		बी. ओबशय्या, सर्वे. सहायक	

एम. ए. सी. पी के मामले

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों के एम.ए. सी. पी. मामलों का निपटारा किया जा चुका है।

क्रम सं	ग्रूप 'बी' अराजपत्रित	ग्रूप 'सी' (पूर्ववर्ती ग्रूप 'डी')
1	वी. सूर्य प्रभा, मानचित्रकार, डिवि. I	एल. योहन
2	पी.के.लूहा, मानचित्रकार, डिवि. I	सी.नारायणा
3	शेख मीरावली, मानचित्रकार, डिवि. I	जे.जॉन
4	एम. भुवनेश्वरी, मानचित्रकार, डिवि. I	एस. रामय्या
5	बी.एस.वी. वरलक्ष्मी, मानचित्रकार, ग्रेड़. II	बी. पुल्लया
6	-	पी. प्रकाशम
7	-	शेख कासिम पीरा
8	-	एम. लक्ष्मी नारायणा
9	-	एम. वेंकटेश्वरलू
10	-	जी. जयन्ना

आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के अधिकारियों / कर्मचारियों के बच्चे जिन्होंने शैक्षणिक निपुणता दिखाई है।

1. **कुमारी अन्वेषा कर**
   सुपुत्री डॉ. पी.के कर
   सी जी पी ए 9.8/10 दसवीं कक्षा
   केंद्रीय विद्यालय
   हैदराबाद

तेलुगु में विवृत्त श्रेणी नक्शे (ओ.एस. एम.) की तैयारी

(बी.एच.राव, अधी. सर्वे., जी.वेणु, अधि. सर्वे., एम.राकेश, अधि. सर्वे., एस.पेंटा रेड्डी, मानचित्रकार)

प्रस्तावना

पूर्व में विभिन्न नक्शे तेलुगु में प्रकाशित हुआ करते थे जैसे आंध्र प्रदेश राज्य नक्शा (1999), भारत के राजनीतिक नक्शे आदि । ऐसे नक्शे, अक्षरांकण स्टिक-अप (lettering stickups) सहित स्क्राइबिंग के परम्परागत तकनीक का उपयोग कर प्रकाशित होते थे। तथापि कोई भी स्थलाकृतिक नक्शे तेलुगु में प्रकाशित नहीं हुए है। परंतु हाल ही में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने विवृत्त श्रेणी टोपो नक्शों (ओ.एस.एम) को क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध करवाने के लिए एक नीति को जारी किया है । जिसके परिणाम स्वरूप आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने राज्य की राजधानी हैदराबाद को दर्शाते हुए एक शीट को, प्रयोग के आधार पर अंकीय माध्यम से तेलुगु में करने का काम लिया है ।

फॉन्ट की खोज में :

माइक्रोस्टेशन साफ्टवेर के अनुकूल डी.जी.एन. फार्मेट में मूल डाटा बेस पहले से ही उपलब्ध है। मूल-पाठ को बैठाने के लिए माइक्रोस्टेशन के अनुकूल एक सुविधाजनक तेलुगु फॉन्ट की आवश्यकता है। अनेक फॉन्टों की जाँच की गई, परंतु कुछ भी माइक्रोस्टेशन के अनुकूल नहीं पाया गया क्योंकि तेलुगु लिपि में बहुत सारी मात्राएँ अगल से लगवाएं जाने के कारण "मात्रा" को लगाना एक कठिन कार्य साबित हुआ । तथापि वेब में बहुत छान-बीन करने के बाद "टी टी एल हेमलता" फॉन्ट को खोजा गया और माइक्रोस्टेशन परिवेश में मूल पाठ को रखने में उपयोगी पाया गया ।

अनुवाद

विभिन्न वर्णनात्मक अभिउक्तियाँ, चिन्हों, पाद- टिप्पणियाँ आदि का अंग्रेजी से तेलुगु में अनुवाद हेतु सभी प्राप्य साधन जैसे कि इंटरनेंट, नेट पर अनुवाद, शब्दावली आदि का आश्रय लिया गया ।

माइक्रोस्टेशन परिवेश में मूल पाठ को बैठाने के लिए कार्यविधि

फॉन्ट यानि "टी टी एल हेमलता" वांछित स्थान पर लोड किया गया । तेलुगु लिपि में बहुत सारी मात्राओं के अंतःस्थापित होने के कारण एक विशिष्ट शब्द या अक्षर के लिए सही मात्रा के चयन हेतु अधिक सावधानी बरतना का सुनिश्चित किया गया । वांछित मूल – पाठ को मइक्रोसाफ्ट वर्ड में टंकित किया गया । माइक्रोस्टेशन वर्शन 8 फाइल में अनोटेशन टेक्स्ट एडीटर के माध्यम से कापी और पेस्ट किया गया । उक्त

शीट के 22 टोपो से अनुवादित अनोटेशन को यथा सत्यापित किया गया। अनोटेशन को किनारे में और उपरोक्त शीट के नाम फाइल में रखा गया।

मामले जिनको सुलझाना है :-

1. फॉन्ट के आकार का मानकीकरण।
2. तेलुगु लिपि में विभिन्न वर्णनात्मक अभिउक्तयाँ के सुविधाजनक शब्दों का चयन।
3. मूल- पाठ को संगठित करना एक जटिल कार्य है और समय लेने वाली कार्यविधि है और पर्याप्त मात्रा में श्रेत्रीय भाषा यानि तेलुगु के ज्ञान की जरूरत है।
4. ज्यादा संख्या में संपादन/ मूल-पाठ के संगठन की आवश्यकता है।
5. तेलंगाना राज्य/तेलुगु विश्वविद्यालय के उक्त राजभाषा विभाग से अनुवादित लिपि को प्रमाणीकरण करने की आवश्यकता होगी।

समाप्ति

स्थानीय लिपि (तेलुगु) में ओ एस एम क्रमांक नक्शों की तैयारी से अधिक संख्या में लोगों को स्थलाकृतिक नक्शों को आसानी से प्रयोग करने में सुविधा होगी। स्थलाकृतिक नक्शों में भाषा-विषयक संबंधी सुरूचिकारी पदार्थ को जोड़ने से निश्चयही भारतीय सर्वेक्षण विभाग के उत्पाद के प्रचार को बढ़ावा मिलेगा और बाजार में अपनी अहमियत बढ़ाएगा।

चुनौती के लिए तैयारी

(रघुनाथ त्रिपाठी, अधीक्षक सर्वेक्षक)

किसी भी विभाग में नई चुनौतियों को सामना करने के लिए क्षमता निर्माण की आवश्यकता है ।यदि यह नहीं किया जाए तो प्रस्तावित योजनाएं विफल हो जाती हैं ।क्षमता निर्माण से पहले, उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य को परिभाषित किया जाना आवश्यक है ।क्योंकि इसके कार्यान्वयन के स्तर में, योजना और निष्पादन में काफी अंतर हो सकता है । क्षमता निर्माण के अन्य मानकों के अंतर्गत अनुवर्ती सुविधाओं के रखरखाव, और संभावित विकास भी शामिल हैं । क्षमता निर्माण के किसी भी प्रयास में, प्रतिभा की खोज को ही पहले कदम के रूप में लिया जाना चाहिए ।भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सही क्षमता निर्माण के बाद ही 1:10,000 के पैमाने का सर्वेक्षण करने और मानचित्रण व्याप्ति संभव हो पाएगा । आधुनिक अधि प्रौद्योगिकी में कर्मियों के प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है लेकिन यह देखना है कि जो मांग और सर्वेक्षण और मानचित्र की आपूर्ति की श्रृंखला से संकेतित है जनता के लिए उपयोगिता बढ़ा रही है । शुरू में हालांकि बाधाएं आना बाध्य है, हमें यह कार्य शुरू करना और परिणाम की प्रतीक्षा करनी है । इस प्रयास में खुले अधिकार क्षेत्र के विशेषज्ञों को नियमित रूप से परामर्श किया जाना चाहिए । सर्वेक्षण और नक्शों के उपयोगकर्ताओं की मांग और एक बड़े परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से देखने के लिए, यह महत्वपूर्ण है ।

यहां तक कि उपयोगकर्ता के लिए भी डिजिटल डेटा का उपयोग सीमित है, भारतीय सर्वेक्षण विभाग उपयोगकर्ताओं को नियमित आधार पर सहायता और मूल्य संवर्धन के लिए सलाह देकर नक्शे के क्षैतिज उपयोग तक का विस्तार कर सकता है । उस बात पर ध्यान देते हुए भारतीय सर्वेक्षण विभाग की सेवा हेतु जी आई एस वैज्ञानिकों को शामिल करने की आवश्यकता है । यह महँगा मामला होने पर भी वरीयता से भरी हमें भविष्य की चुनौतियों को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि नक्शे के उपयोग से विकास को तो होना ही है ।

नमक का महत्व

(कृष्ण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

एक राजा की तीन बेटियां थी । तीनों बहुत ही सुन्दर, सुशील और विशेष गुणवाली थीं । एक दिन राजा ने तीनों राजकुमारियों को अलग-अलग से एक ही सवाल पूछा । " बेटी तुम मुझे कितना चाहती हो " बड़ी राजकुमारी ने जवाब दिया ," पिताजी मैं आपको सोने जैसे चाहती हूँ। अर्थात् सोने के आभूषणों से मुझे जितना प्यार है, उतना ही प्यार आप से है पिताजी ।" राजा बहुत संतुष्ट हुआ और दूसरी राजकुमारी से पूछा,"बेटी ,दीदी ने तो जवाब दे दिया, अब तुम बताओ, तुम मुझसे कितना स्नेह रखती हो । दूसरी राजकुमारी बोली, " पिताजी । मैं आपको हीरों जैसा चाहती हूँ । अर्थात् हीरों के गहनों से मुझे जितना प्यार है, उतनी ही प्यार आप से है पिताजी ।" राजा तो फूले न समाया ।सोचने लगा ," मैं बेमतलब का संकोच कर रहा था । मेरी बेटियां तो लगता है , मेरे बगैर जी नहीं पाएँगी "। अब तीसरे से क्या पूछूं । फिर भी पूछ लेता हूँ फिर तीसरी बेटी से पूछा," बेटी, तुम मुझे कितना चाहती हो । तीसरी राजकुमारी ने जवाब दिया," पिताजी मैं आपको नमक जितना चाहती हूँ । जवाब सुनते ही राजा आग-बबूला हो उठा और बुरी-भली सुनाकर उसके कक्ष से निकल गया । छोटी राजकुमारी ने कुछ नहीं कहा । बल्कि राजा की डांट सुनकर चुपचाप रह गयी । रात हुई, राजा को सारे महल के कार्य निपटाने के बाद भूख लगी । खाने के लिए उसे हीरों से सुसज्जित सोने के सिंहासन पर छोटी राजकुमारी ने बैठाया । फिर सोने की थाली में नाना प्रकार के व्यंजनों से युक्त खाना परोसा और राजा को खाना शुरू करने को कहा । राजा ने मुंह में खाना रखा तो महसूस किया, खाना फीका है । फिर हर व्यंजन को चखा तो पाया सब फीके हैं । फिर तो आग-बबूला होकर अपनी रानी पर चिल्लाया " इस तरह की भूल कैसे हो गयी हमें क्या समझ रखा है व्यंजन दिखाकर ललचाना और फिर खाने नहीं देना यह बोलते हुए रानी पर सोने की थाली जिस पर व्यंजन परोसे हुए थे, फेंकने के लिए हाथ उठाया । उठे हुए हाथ को तीसरी राजकुमारी ने पकड़ लिया और पूछा "पिताजी,खाना तो बढ़िया है, फिर कमी क्या है?" राजा बोले, "नमक के बिना,कोई, खाना खाया जा सकता है?" राजकुमारी बोली, "पिताजी,आपको तो नमक से नफरत है ना, इसलिए मैंने व्यंजन बनवाते हुए, नमक नहीं डलवाया ।" फिर तो राजा समझ गया कि छोटी बेटी ने उन्हें सबक सिखाने के लिए यह भोजन तैयार करवाया है । फिर बोला "बेटी, मैं समझ गया । नमक के बिना खाना जैसे स्वादिष्ट नहीं, उसी तरह तुम्हारे प्यार बिना मेरा वर्चस्व नहीं " और राजकुमारी को गले लगा लिया ।

मायाजाल

(एन.बी. स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक)

इस जगत में कुल 84 लाख जीव रशियाँ है और उनमें मानव जन्म सबसे उत्तम है। उत्तम इसलिए है कि भगवान ने मानव का आधार इसलिए दिया है ताकि इस जन्म अच्छे कर्म कर वह मोक्ष की प्राप्ति कर सके। मोक्ष यानि पुर्नजन्म नहीं। यदि कर्म बुरे हुए तो फिर 84 लाख जीवराशियों में पैदा होने के लिए वह आत्मा कालचक्र में दोबारा फंस जाती है। इस संपूर्ण कालचक्र की यात्रा करते हुए जब आत्मा मानव की योनि में प्रवेश करती है, तब वह भगवान से यही प्रार्थना करता रहता है कि हे भगवान मुझे इस कैद (यानि मां का गर्भ) से जल्दी मुक्ति दिला दे क्योंकि मैं तुम्हारा ध्यान सही ढंग से नहीं कर पा रहा हूँ क्योंकि इस कैद में अनेक तरल पदार्थों के साथ-साथ मल-मूत्र में भी टहल रहा हूँ। यह कैसा नरक है जहां आपने मुझे फंसा रखा है। तब भगवान भी बोलते हैं कि "तू अभी बालक शिशु का रूप धारण करने वाला है। तुमने इतने वर्षो/ युगों में जितने पाप किये हैं उन सबकी यह चरम सीमा है। यह चरम सीमा बहुत ही पीड़ा देने वाली है जिसे तुम्हें जीतना है, लांघना है। इस चरम सीमा से मुक्ति होने के बाद तुम क्या करोगे? " शिशु कहता है " भगवन आप जो कहेंगे। " भगवन पूछते हैं क्या तुम अपना जीवन मेरा ध्यान करते हुए मेरे लिए समर्पण कर दोगे ? "शिशु कहता है," हां मैं समर्पण कर दूंगा आपके लिए।" भगवन भी जानते हैं, शिशु को नौ महीने गर्भ में रहना ही पड़ेगा तभी पूर्ण शरीर का विकास होकर जब वह बाहर आएगा तो मेरी सेवा करेगा। उक्त नौ महीने तदनुसार भगवन शिशु का वार्तालाप नौ महीने चलता रहता है ताकि शिशु अपने चारों ओर फंसे मैल की गंध का ध्यान न दे। फिर जब वह बाहर निकलता है, भगवान को धन्यवाद करता है और कहता है " मैं तुम्हारा बहुत ही आभारी हूँ प्रभु। अपने मुझे मुक्ति दिलाई। अभी मुझमें वह ताकत नहीं कि मैं तुम्हारा ध्यान करने के सिवा और कुछ करूँ। मेरे माता –पिता मुझे सींच कर जब अपने पैरों पर चलने की ताकत दे देंगे तभी मैं तुम्हारे लिए कुछ कर पाऊँगा।" भगवान कहते हैं " अरे मूर्ख, तू नहीं जानता। यह जगत एक मायाजाल है। मुझे पूर्ण विश्वास है तू मुझे भूल जायेगा और फिर से कालचक्र में पड़ जायेगा। शिशु कहता है। " नहीं भगवान। ऐसा नहीं है। भगवान, मेरा विश्वास करो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ मेरा जीवन आपके लिए ही समर्पण है।" भगवान कहते है, "देख लूंगा इस जगत के मायाजाल में तू मेरी क्या का सेवा करेगा ? " यह शिशु और प्रभु का वार्त्तालाप सुनकर देवर्षि नारद भगवान के पास पहुँचे। पूछने लगे। " प्रभु आप किस मायाजाल की बात कर रहे हैं ? " प्रभु बोले " नारद। मैं समस्त जीव- राशियों का स्वामी हूँ। उनका कल्याण चाहता हूँ। उनको सुख भी और दु:ख भी देता हूँ वह इसलिए कि मायाजाल के मोह एवं अहंकार में पड़कर खुद को संपूर्ण मानने वाले प्राणी को दंड न दूं तो फिर मेरा स्मरण कैसे करेगा।" नारद बोले " प्रभु, आपके वचन का मतलब किस

दिशा में जाता है यह तो मुझे नहीं पता । एक तरफ कहते हैं, समस्त जीवराशियों का कल्याण चाहता हूँ । दूसरी ओर कहते है, दंड देता हूँ । तीसरी ओर मायाजाल । अरे नारायण । आप जब समस्त जगत के स्वामी हैं, सब आपके अधीन ही है तो फिर मायाजाल शब्द आपने जो प्रयोग किया है, वह आपके अधीन से बाहर कैसे हो गया?" नियंत्रण कीजिए । जीवराशियां उसके चपेट में नहीं आएंगी । फिर सब आपका गुणगान ही करेंगे और सबको मोक्ष की प्राप्ति होगी । " भगवान कहते हैं " हे देवर्षि , मेरे लिए समस्त जीवराशी को परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है । मानव जीवन ही उनमें अंतिम परीक्षा है ।बस उसको लांघ ले, मैं पुर्नजन्म से मुक्ति दिला दूं।" नारद जी भगवान से तर्क करने लग गये । काफी देर बाद भगवान ने कहा " देवर्षि । आपसे बहस और नहीं कर सकता । आपसे बहस कर मेरा गला सूख गया है । जरा एक छोटे कलश या कमंडल में पानी लेकर आइये ताकि मैं अपनी प्यास बुझा सकूं । नारद को झटका लगा और पश्चाताप करने लगे, " बेमतलब मैने अर्न्तयामी से बहस कर उनको कष्ट दिया । वे सम्पूर्ण ज्ञानानंद के सामने मेरी हैसियत क्या है । पता नहीं आज मेरी मति मारी गयी और मैं बेमतलब बहस करने लगा । प्रभु को प्यास लगी है और वो भी मेरी वजह से । जल्दी से उनकी प्यास मैं बुझा दूं । पानी की खोज में सारे लोकों का भ्रमण करते हुए नारदजी पृथ्वी लोक में पहुँच गए । पृथ्वी लोक पहुँचकर पानी की खोज में एक कुएँ के पास पहुँचे तो देखा कि एक अत्यन्त सुंदर नारी कुएं से पानी निकाल रही है ।नारद ने सोचा वह सुन्दर स्त्री पानी भरकर चली जाए तो फिर मैं थोड़ा सा पानी भर लूं । नारद उसे देख रहे थे । स्त्री भी नारद जी को देख रही थी । नारदजी ने पूछा ," देवी ,क्या तुम यहीं आसपास रहती हो? स्त्री ने जवाब दिया ," हां " नारदजी फिर पूछे ," देवी, क्या तुम्हारा विवाह हो चुका है ?" । स्त्री बोली "नहीं " नारदजी का विचलित मन फूले नहीं समाया और पूछ ही लिया " देवी, यदि तुम अविवाहित हो और यदि तुम्हें कोई परेशानी न हो, तो क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ? स्त्री सांप्रदाय औरत थी । बोली, " मेरे पिता की आज्ञा के बिना मैं आपसे विवाह नहीं कर सकती ।" नारदजी बोले, " देवी ,सुशील नारी के यही गुण होते हैं । यदि तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं तुम्हारे साथ चलकर तुम्हारे माता-पिता से बात करूंगा और तुमसे विवाह करूंगा ।" युवती राजी हुई और सिर एवं कंधे में पानी से भरे घड़ों को ढोते हुए आगे चलती रही और नारदजी पीछे चलने लगे । संपूर्ण रास्ते में उस सुन्दर स्त्री के निहारते हुए मन में सपनों के पुल बांध रहे थे । उस सुन्दर स्त्री के पिता के पास जाकर अपना परिचय देते हुए उनकी बेटी से विवाह करने का प्रस्ताव रखा ।साक्षात नारद मुनि को अपना दामाद स्वरूप देख उसी मुहूर्त में मंगनी हो गई और एक शुभ मुहूर्त्त में विवाह भी हो गया । विवाह के कुछ दिनों के पश्चात उनके बच्चे हो गये । बच्चे बड़े भी हो गये । फिर तो वे अपने गृहस्थ आश्रम में इतने व्यस्त हो गये कि उनके मुंह से नारायण मंत्र निकलना भी बंद हो गया । कई वर्षों बाद एक शाम को जोर की आंधी के साथ तूफानी बारिश हुई । इस माहौल ने इतना विकराल रूप धारण कर लिया था कि वातावरण प्रलय में बदल गया । चारों तरफ पानी भर गया। बहुत   सारे लोग, पशु आदि पानी में बह गये ।किन्तु प्रकृति के विकराल रूप के सामने ठहरने का साहस किसे था? देखते ही देखते उनका गृह भी बाढ़ की चपेट में आकर टूट गया और पानी में बह गाया। पत्नी और बच्चे डर से

रोदन करने लगे। देखते-देखते कनिष्ठ पुत्र के अलावा पत्नी और बाकी बच्चे भी पानी में बह गए। फिर तो नारदजी से सोचा इस कनिष्ठ को मैं कंधे पर लिए चलता हूँ ताकि वह तो बुढ़ापे में मेरा सहारा बनेगा। किन्तु प्रलय की तीव्रता इतनी तेज थी कि नारदजी के नाक के ऊपर से पानी बहने लगा।फिर तो वे खुद भी भूल गये कि बेटे को बचाना है। सोचने लगे, मैं किसी तरह जीवित बच जाऊँ। उसी सोच ने उनके कनिष्ठ पुत्र को भी नहीं बख्शा। किसी तरह कुछ समय उपरान्त प्रलय शान्त हुआ। पानी घट गया। चारों तरक मनुष्य,पशु - पक्षी आदि की लाशें टूटे हुए रास्ते और घरों के बीच पड़ी हुई थी । नारद मुनि को बेहद दु:ख हुआ और ठिठोर कर रोने लग गये। रोते-रोते वे खुद के बारे में सोचने लगे कि भगवान ने उनके साथ ऐसा अन्याय क्यों किया। काश वे भी मर जाते तो अच्छा होता। तभी उस राह से व्यास महर्षि गुजरते हुए नारदमुनि से परामर्श करने लगे। नारदजी कहने लगे " पता नहीं मैने कौन सा पाप किया है कि मेरे पूरे परिवार का सर्वनाश हो गया है। मुझे क्यों मृत्यु नहीं आई। इस पर व्यासजी ने कहा शायद तुम्हारा समय नहीं आया है इसलिये तुम बच गये हो। हालांकि व्यास जानते थे कि नारद मायाजाल में फंसा हुआ है। " फिर इसका निर्णय कौन करता है " नारद ने व्यासजी से पूछा। व्यासजी ने उत्तर दिया "यह तो मृत्युलोक के अधिपति यमराज ही इसका उत्तर देंगे"। फिर वे दोनों मिलकर यमराज के पास गये। यमराज ने आने का कारण पूछा तो व्यासजी ने नारद मुनि की सारी दु:ख भरी गाथा सुनाई और पूछा कि "मृत्यु ने इनका आलिंगन क्यों नहीं किया?" यमराज बोले, "मैं कोई नहीं हूं। मेरा यमदूत ही इसका उत्तर दे सकता है क्योंकि मैं यमदूत के द्वारा किसी आत्मा को लाने के बाद ही उसके पाप-पुण्य का हिसाब देख निर्धारित सजा का ऐलान करता हूँ। यदि यमदूत आपको लेकर मेरे पास नहीं आया तो इसमें मेरा क्या दोष है ? यमदूत से पूछ लें।" फिर व्यासजी ने उनके यमदूत से वही सवाल करने पर यमदूत ने कहा, " महामुनि, मैं कैसे किसी के शरीर से आत्मा को छीनकर ले आऊं। मैं तो यमलोक का सेवक मात्र हूँ। चित्रगुप्त जब तक आज्ञा नहीं देते, तब तक मैं कोई कार्यवाही नहीं कर सकता। आप इस प्रश्न का उत्तर चित्रगुप्तजी से पूछ लें। " फिर व्यासजी ने चित्रगुप्त से वही सवाल करने पर चित्रगुप्त ने कहा," महामुनि, मैं तो यमदूत को तभी आज्ञा देता हूँ जब उस प्राणी का सारा लेखा - जोखा समाप्त हो जाता है। अभी माननीय नारद जी की मृत्यु का समय आया नहीं है। अभी उनका कुछ किया नहीं जा सकता।" व्यासजी ने नारद से कहा," देखो नारद, अभी तुम्हारा समय आया नहीं है तभी तुम जीवित हो। चलो चलते हैं। अब पिछली घटना को भूल कर आगे की सोचो। " बस इतना ही कहना था कि चित्रगुप्त ने फिर व्यासजी को बुलाकर कहा ," हे ऋषिवर ! इनकी कुण्डली में यह लिखा है कि मृत्यु तभी इनको गले लगा सकती है जब ये एक साथ आपको ,मुझे, यमराज और उनका वाहन भैंसे का एक साथ दर्शन करेंगे। चूंकि इनके द्वारा यह कार्य पूर्ण हो चुका है, अत: इनका जीवन पूर्ण हो गया है।" बस इतना ही था कि नारद जी को आवाज आने लगी अरे देवर्षि ! देवर्षि !!। मुझे कब से प्यास लगी हुई थी। मेरा गला सूख गया है, किन्तु आपने मुझे अब

तक पानी नहीं दिया । कहां है पानी ? “ ये साक्षात नारायण की आवाज सुन नारदजी को होश आया और भगवान के चरणों में पड़कर गिड़गिड़ाने लगे यह कहते हुए कि ,” हे नारायण । आपने मुझे अच्छा सबक सिखाया है । मैंने आपसे बहस क्या कर ली,आपने मुझे मायाजाल का साक्षात्कार करवा दिया । क्षमा कीजिए मैं आपको पानी नहीं पिला सका । मेरी वजह से आपका गला खूब सूख गया होगा । “ यह कहते हुए उनकी अश्रुधारा से नारायण के पांव धुल गये और भगवान ने कहा,” देवर्षि आप चिंतित ना हों । आपने अश्रुधारा से मेरे चरण धोकर निस्वार्थ सेवा कर दी । मेरी प्यास बुझ गयी है । अब आप मुक्त है । “ फिर नारदजी खुशी से नारायण-नारायण कहते हुए निकल गये ।

<u>घाट का पत्थर</u>

(बैष्णव बेहेरा, अधिकारी सर्वेक्षक)

माता-पिता और जन्म भूमि को छोड़ कर हम सब बन गए हैं घाट का पत्थर । धन्य है वह महापुरूष जिसने हमें स्थापित किया, मैं उस महापुरूष के विषय में वर्णन नहीं कर सकता । शायद मैं अति पाप के कारण पत्थर बन गया , लोकिन मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में मेरा भाग्य बदल जाएगा, चूँकि मैं लोगों की मन से सेवा करता हूँ, इसका फल हमको भगवान अवश्य देंगे । लोगों का सेवा करते –करते मेरा आकार भी बदल गया । परन्तु सेवा करते –करते मेरा नाम रोशन हो रहा है , बल्कि हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । मेरे कर्म के चलते मेरा भाग्य बदल रहा है । मैं हमेशा जलमग्न रहता हूँ और पीठ पर प्रतिदिन मार झेलते रहता हूँ । शायद ही ऐसा पीड़ा इस संसार में किसी को मिलती होगी । मेरा स्थानान्तरण भी नहीं है, मैं कई महापुरूषों को देखता आया हूँ । कितने महारथियों ने प्राण त्याग दिये , लेकिन तबसे मैं यहाँ अकेला पड़ा हूँ । मैं हर मौसम की मार झेल रहा हूँ । बच्चे-बूढ़ों की सेवा करते-करते मैंने कुछ पुण्य कमा लिए हैं, और आशा करता हूँ कि मुझ को भविष्य में मानव जन्म मिल सकता है । मानव जन्म मिलने से मैं आपका भजन-कीर्त्तन करूँगा ।

ऐसे देखते–देखते कई युगों के बाद हमको मानव जन्म प्राप्त हुआ । मानव जन्म में अगर इस धरित्रि में देखा कि यहाँ ऊँच-नीच, जात-पात, नीति-नियम, विदिन, भ्रष्टाचार अन्याय –अत्याचार चर्म-अचर्म का तांडव नृत्य चल रहा है । देखकर मेरे मन में परिवर्तन आ गया कि प्रभु मुझको मेरा पिछला जन्म वापस दे दीजिए।

पत्थर जन्म में रह कर मेरा कोई-कोई साथी अच्छे कर्म के चलते मंदिरों में स्थान प्राप्त कर लिया है । कोई-कोई तो ठाकुर बन गये । लोग-प्रतिदिन उनकी पूजा करते हैं ।

हम लोगों में से कोई-कोई सामजिक कार्य में सहयोग प्रदान करते हैं। कोई गृह-निर्माण में सहयोग दे रहे हैं, तो कोई मंदिर-निर्माण में सहयोग दे रहे हैं। कोई तो सीधा मूर्ति बन गये इसीलिए उनके मन में घमण्ड आ गया। अहल्या ने पत्थर होने के नाते भगवान का दर्शन पा लिया। इसलिए पत्थर जन्म होने के चलते उनके मन में काफी अहं भाव आ गया।

हमारे अन्दर विभिन्न रूप भी है। यथाः लोहा पत्थर, चूना पत्थर, संगमर्मर, काला पत्थर (ग्रेनाइट स्टोन), मुलायम पत्थर (soft stone) इत्यादि।

लोहा पत्थर, जो देश के निर्माण में काम आता है।
चूना पत्थ। जो सिमेंट निर्मणि के काम में आता है।
संगमर्मर, घर और मंदिर का फर्श (flooring) में काम आता है।
काला पत्थ। घर का फर्श और आला बनाने में काम आता है।
मुलायम पत्थर, शिल्प कला के विकास में योगदान देते हैं।
पत्थर जन्म होकर भी मैं काफी गर्व महसूस करता हूँ। मेरी भगवान से अन्तिम विनती ये है कि आप मुझे अन्तिम समय में दर्शन देने को कृपा करें।

न हमको पत्थर जन्म चाहिए।
न हमको मानव जन्म चाहिए।
हमको तो सिर्फ इस भव सागर से पार होना चाहिए।

ज्यादा लोभ न करना

(पांडव कुन्टिया, सहायक सर्वेक्षक)

मनुष्य भगवान की सृष्टि है , इसलिए वह भगवान, का अंश है। जब तक वो माँ के गर्भ में था, तक तक वह मोह-माया से वंचित था, एवं हमेशा भगवान, के समीप था लेकिन जब वो पृथ्वी पर अवतीर्ण हुआ, उसको मोह-माया ने घेर लिया। पाँच साल तक वो ईश्वरीय सत्ता में रहता है, इसलिए कहा जाता है कि "CHILD IS THE INCARNATION OF GOD" इसके बाद मोह-माया में आकर्षित हो कर ईश्वरीय सत्ता को भूल जाता है। बचपन में वो बहुत आज्ञा और मोह-माया रहित और चरित्रवान रहता है। जब समय बढ़ता जाता है तब उसके समस्त उत्तम गुण ध्वंस होकर गलत मार्ग पर चला जाता है।

बचपन में विद्या शिक्षा, जवानी में स्त्री दीक्षा एवं पारिवारिक चिन्ता में मग्न होकर वह समस्त मौलिक सत्ता को खो देता हे। सुबुद्धि नष्ट होकर सुबुद्धि में आ जाता है। देव प्रकृत्ति नष्ट होकर राक्षस प्रवृत्ति जारवत होता है एवं परिवारिक जंगल में फंसकर भगवान का नाम लेना भूल जाता है। अपना परिवार का भरण पोषण के लिए कठिन परिश्रम करता है। लेकिन उनका पेट भरता नहीं है। ईश्वर की सत्ता को भूल जाता है और अन्त में पश्कत्व को प्राप्त होता है, शरीर रोगग्रस्त हो जाता है, दृष्टि शक्ति क्षीण हो जाती है, चलने – फिरने में असमर्थ रहता है, रात को नींद नहीं आती है, फिर भी लोभ को छोड़ नहीं पाता है। अपने बीवी-बच्चों तथा परिवार के बारे में सदा सोचने लगता है। शरीर वृद्धावस्था को प्राप्त होता है। परिवार के कोई भी सदस्य पूछते नहीं है।

परिवार के लोग उसको ढंग से खाना भी नहीं देते हैं। उसको घर से दूर रखते हैं फिर भी यह अधम मनुष्य भगवान के बारे में सोचता नहीं है। लोभ का अन्त नहीं होता है, पाप का बोझ बढ़ते जाता है। अन्त में नरक को प्राप्त होता है, फिर भी मनुष्य भगवान को समझ नहीं पाता है। परिवार के लिए इतना बड़ी दुर्दशा झेलता है, उनको कोई भी नहीं पूछता है। उसके द्वारा जमा की गई पूँजी को परिवार वाले उनके सामने मौज करते हैं।

लोभ मनुष्य को अन्धा बना देता है। आदमी की हत्या करते हैं। लोभ के वशीभूत होकर दूसरों की सम्पति को लूटते हैं। जिससे समाज मैं भ्रष्टाचार बढ़ता है, इसलिए हे। मानव तुम क्यों लोभ करते हो ? लोभ नहीं करके भगवान का स्मरण करो, हरि कीर्तन करो, तप जप करो और स्वर्ग के अधिकारी बनो। उत्तम कर्म करके भगवान की शरणागत हो जाओ। भगवान तुम्हारे समस्त सुख-दु:ख का भार वाहन करेंगे।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच : ॥

इसलिए अच्छा कर्म करके पुण्य कमाना है । हमेशा धर्म की जय और पाप का क्षय होता है ।धर्म-कर्म करके विजय प्राप्त होगी , लेकिन अधर्म में जाकर नरक गामी नहीं होना ।

एकदा: अन्धा राजा धृतराष्ट्र संजय को पूछा कि "हे संजय ! इस धर्म युद्ध में किसकी जय होगी ? उत्तर में संजय बोले कि "यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर: । तत्र श्री विजयो: भूति: ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥" अर्थात् जहां योगेश्वर कृष्ण एवं श्रेष्ठ धनुर्धारी अर्जुन एक साथ हों, वहां विजय निश्चित है ।

इसलिए देखा गया कि हमेशा धर्म की जय और अधर्म की पराजय होती है ।

धर्म स्वच्छ, निर्मल, लेकिन अधर्म कदाकार कुश्चित है , इसलिए लोभ-लालच में वशीभूत न होकर सत् कर्म करो । अन्याय का परित्याग करो । लोभ मत करो । जीवन में कष्ट करके जो धन कमा लिया, वो सब इस धरती में रह जाता है, अन्तिम क्षण में साथ कोई नहीं ले जाता , इसलिए अन्धरे में भटक नहीं जाना । इसलिए कहा गया है कि-अति लालच नहीं करना । अति सर्वत्र गर्हितम् । अर्थात् अति सर्वनाश का कारण है ।

अति दर्पे हता: लंका ।
अति मानेस्य: कौरवा: ॥
अतिदर्ाने बलि वध: ।
अति सर्वत्र गर्हितम् ॥

टूटा वृक्ष का अभिमान

(चरणदास नारायण गेडम ,सर्वेक्षण सहायक)

वन में खड़े एक वृक्ष के साथ लिपटी एक लता भी धीरे-धीरे वृक्ष के बराबर हो गई। वृक्ष का आश्रय लेकर उसने भी फलना –फूलना आरंभ कर दिया । बेल को फलते – फूलते देखकर वृक्ष को अहंकार हो गया कि मैं न होता तो लता अस्तित्व हीन होती । वह लता को धमकाते हुए बोला, ओ बेल । चुपचाप मेरा कहना माना कर, मैं जो कह रहा हूं, वह किया कर, नहीं तो धक्के मार कर भगा दूँगा । पेड़ का प्रलाप जारी था कि दो पथिक वहाँ से निकले । एक बोला, अरे भाई, जरा देखो तो, यह वृक्ष कैसा सुंदर है, इस पर कैसी सुंदर लता पुष्पित हो रही है । आओ , इसके नीचे थोड़ी देर विश्राम करें । अपना महत्व लता के साथ है, यह जानकर वृक्ष का अभिमान भी नष्ट हो गया । साथ – साथ रहने से ही सबकी प्रगति होती है ।

बेटी

(डी. रवि बाबू, पटल चित्रक ग्रेड-II)

बेटी घर की लाज होती है ।
पापा के सर का ताज होती है
दिल की सदा से रही है इच्छा
बेटी तुझको है पाना
आई हो मेरे जीवन में
जैसे एक नन्ही कविता,
राह देखता हूँ मैं तेरी
जल्दी से मेरे पास आना
माँ की गोद में सदा रहती हो
कुछ पल मेरे पास भी आना
न चाहत है अब धन दौलत की
तू ही लक्ष्मी, तू ही मेरी मन्नत भी
डर लगता है सोचके जब
एक दिन छोड़ के जाएगी तू
कितना मुझे रूलायेगी तू
बेटी होती है बाबुल की लाड़ली

यह ज़िन्दगी

(सैय्यद इदरीस, पटल चित्रक ग्रेड –II)

बैठ जाता हूँ मिट्टी पे अक्सर
क्यों कि मुझे अपनी औकात अच्छी लगती है।

मैंने समन्दर से सीखा है जीने का सलीका,
चुपचाप से बहना और अपनी मौज में रहना।

चाहता तो हूँ कि ये दुनिया बदल दूँ पर दो वक्त की रोटी
के जुगाड़ में फुर्सत नहीं मिलती दोस्तों।

महँगी से महँगी घड़ी पहन कर देख ली,
वक्त फिर भी मेरे हिसाब से नहीं चलता।

यूं ही हम दिल को साफ रखा करते थे
पता नहीं था कि कीमत चेहरों की होती है।

अगर खुदा नहीं है तो उसका जिक्र क्यों ?
और अगर खुदा है तो फिर फिक्र क्यों?

''दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं
एक उसका "अहम " और दूसरा उसका " वहम"।

पैसे से सुख कभी खरीदा नहीं जाता , और
दु:ख का कोई खरीदार नहीं होता।

मुझे ज़िन्दगी का इतना तजुर्बा तो नहीं,
पर सुना है सादगी में लोग जीने नहीं देते।

माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती,
यहाँ आदमी आदमी से जलता है।
विश्व के बड़े से बड़े वैज्ञानिक यह ढूंढ रहे हैं कि मंगल ग्रह पर जीवन है या नहीं।
पर आदमी यह नहीं ढूंढ रहा है कि जीवन में मंगल है या नहीं।

जीवन में न जाने कौनसी बात “आखरी ” होगी,
न जाने कौन सी रात आखरी होगी ।

मिलते जुलते बातें करते रहो यार एक दूसरे से,
न जाने कौन सी “ मुलाकात ” आखरी होगी ।

अगर जिंदगी में कुछ पाना है तो तरीके बदलो, इरादे नहीं,
ऐ चाँद तू किस मज़हब का है, ईद भी तेरी और
करवाचौथ भी तेरा ॥

उँगलियों की लड़ाई

(शेख मेहबुब पीरा, पटल चित्रक)

एक दिन हाथ की सभी उँगलियाँ आपस में लड़ने लगीं । अगूँठा बोला मैं सबसे बड़ा हूँ । सभी जगह जरूरी कागजों पर मुझसे ही निशान बनाया जाता है । तर्जनी बोली-“मैं बड़ी हूँ । मेरे होने से ही सब लोग काम कर पाते हैं । जैसे-लिखना, खाना, पकड़ना । मध्यमा बोली-“अरे भई । क्या तुम नहीं जानते? जो आकार में लंबा होता है, उसे ही सभी बड़ा कहते हैं । अनामिका सब बातें चुपचाप सुन रही थी । वह तुरंत बोली –“ मैं सबसे बड़ी हूँ । मै तो पूजा करने के भी काम आती हूँ । मेरे से ही रोली,तिलक लगाया जाता है । कनिष्ठिका सभी को लड़ता देखकर उदास थी । वह चुपचाप एक कोने में कुछ सोच रही थी । तभी अंगूठा व तीनों उँगलियाँ उसके पास गई और बोली- “अरे छोटी । तुम तो बड़ी हो ही नहीं सकती ,क्योंकि तुम्हारा नाम ही कनिष्ठिका है । कनिष्ठिका बोली “सुनो अंगूठे भाई और प्यारी उँगलियों । आपस में लड़कर कभी किसी का भला नहीं हो सकता । हममें कोई भी बड़ा-छोटा नहीं है । हम सब मिलकर मुट्ठी बन सकते हैं । तभी हम सब बलवान होंगे । क्या तुम्हें नहीं मालूम कि बंद मुट्ठी में ही ताकत होती है ? इसलिए हमारा लड़ना बेकार है ।” कनिष्ठिका की बात सुनकर सभी एक साथ बोले- “हाँ छोटी बहन । तुम बिलकुल सही कह रही हो । सचमुच अक्ल में तुम ही हम सबसे बड़ी हो ।”

इस नीति कथा से एकता में बल की शिक्षा प्राप्त होती है ।

तेलंगाना- भारत का एक और नया राज्य

(शैलबाला खंडूरी, मानचित्रकार)

तेलंगाना भारत के दक्षिणी भाग में स्थित भारत का 29 वाँ राज्य है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का बीसवाँ बड़ा राज्य है। प्राचीन हैदराबाद रियासत का अधिकतम भाग तेलंगाना राज्य में लिया गया है जहाँ आजादी से पहले निजाम का राज्य था। सन् 1947 में जब भारत अंग्रेजों के चंगुल से आजाद हुआ, उसके बाद भी हैदराबाद का निज़ाम अपनी रियासत संयुक्त भारत में विलीन करने के पक्ष में नहीं था। वह अपनी रियासत पर अपना ही स्वतंत्र शासन चाहता था। अतंत: सरदार बल्लभ भाई पटेल के अथक प्रयास से इस रियासत को भारत की मुख्य धारा में विलीन किया जा सका। इस प्रकार आन्ध्र प्रदेश राज्य की स्थापना हुई और 26 जनवरी 1950 को श्री एम.के. वेल्लोड़ी आन्ध्र प्रदेश राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री नियुक्त हुए। 1956 में हैदराबाद रियासत को आन्ध्र प्रदेश राज्य में विलीन कर दिया गया।

2 जून 2014 में पुनः तेलंगाना राज्य अस्तित्व में आया। आन्ध्र प्रदेश राज्य के उत्तर पश्चिमी 10 जिलों को मिलाकर तेलंगाना राज्य की स्थापना की गयी है। राजधानी हैदराबाद भी तेलंगाना राज्य में स्थित हैं। परन्तु 10 वर्षों तक हैदराबाद दोनों राज्य यानि आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्य की संयुक्त राजधानी रहेगी। दोनों राज्यों के प्रशासनिक कार्य हैदराबाद से संचालित होंगें।

तेलंगाना शब्द का प्रादुर्भाव त्रिलिंगा देश शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है तीन लिंगो वाला देश। तेलंगाना राज्य की तीन दिशाओं में कालेश्वरम, श्रीशैलम और द्राक्षारामम, प्रसिद्व शिव मन्दिर स्थित हैं जिनकी अपार धार्मिक महत्ता है। वास्तव में पृथक तेलंगाना राज्य के लिए 1946 से 1951 के बीच ही प्रारम्भ हो गया था। उस समय कम्यूनिस्ट पार्टी ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था जो असफल रहा। भाषा के आधार पर तेलंगाना और आन्ध्र राज्यों को पृथक करने के लिए अनेक आन्दोलन समय-समय पर होते रहे हैं। इनमें मुख्य आन्दोलन 1969,1972 और 2009 के हैं। इन आन्दोलनों का यह प्रभाव हुआ कि 9 दिसम्बर 2009 में भारत सरकार ने पृथक तेलंगाना राज्य बनाने की कार्यवाही शुरू कर दी। ये घोषणा सुनते ही तटीय आन्ध्र व सीमान्ध्र क्षेत्र के लोगों ने समग्र आन्ध्र प्रदेश के पक्ष में आक्रामक आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया और ऐसी स्थिति में भारत सरकार ने यह कार्य 23 दिसम्बर 2009 तक स्थगित कर दिया। इसके पश्चात भी लगातार पृथक तेलंगाना और समग्र आन्ध्र प्रदेश के लिए अलग-अलग आन्दोलन चलते रहे। पृथक तेलंगाना के पक्ष में कई आत्म - हत्याएं हुई, हड़तालें की गयी जिससे जन साधारण को बहुत असुविधाओं का सामना करना पड़ा। अंतत: पृथक तेलंगाना समर्थकों की जीत हुई और कांग्रेस कार्यकारी समिति ने सर्व सहमति से 30 जुलाई 2013 को पृथक तेलंगाना राज्य की सिफारिश करते हुए बिल तैयार कर दिया। अनेक सोपान पार करते हुए यह बिल फरवरी 2014 को संसद मे पारित किया गया। फरवरी 2014 प्रदेश पुनर्गठन एक्ट के तहत यह बिल संसद में पास हो गया। इसके पश्चात इस नये राज्य तेलंगाना बिल को राष्ट्रपति द्वारा सहमति प्राप्त हुई और मार्च 2014 के गजेट में इसे प्रकाशित किया गया। इस प्रकार नये तेलंगाना राज्य की स्थापना हुई।

प्राशासकीय रूप से तेलंगाना राज्य की स्थापना 2 जून 2014 को हुई। के .चन्द्र शेखर राव की पार्टी "तेलंगाना राष्ट्र समिति" ने चुनाव में प्रदेश में बहुमत हासिल किया और इस प्रकार श्री के.चन्द्र शेखर राव तेलंगाना राज्य के प्रथम मुख्य मंत्री चुने गए।

मैं महंगाई

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

मैं महंगाई,
महंगे देशभक्त लोगों के आमंत्रण पर
भारत आई।
तेज गति लाने प्रगति में
भारत आई।
मुझे गलत मत समझो गरीबों
बहुत ठीक हूँ
बहुमत देकर तुमने जिनको बहुत उठाया
मैं तो उन्हीं की प्रतीक हूँ।

भौतिक वादी युग में योग सिखाती हूँ मैं
भूखे पेट न सोए कोई कुंडलिनी जगाती हूँ मैं।
ध्यान पंथ में चक्र मारकर
मन ज्यों ऊपर चढ़ते-चढ़ते
ब्रह्मरंध्र तक आ जाता है
भाव वस्तुओं के वैसे ही
ब्रह्मरंध्र तक ले आई हूँ

अब इस युग में
एक तेल के पीपे को पा लेने का अर्थ
ब्रह्म को पा लेना है
प्रभु दर्शन की झलक देखना
एक टमाटर खा लेना है।
भारत का आदर्श त्याग है, अनासक्ति है , अपरिग्रह है
मुझको पाकर लोग, वस्तुएँ त्याग रहे हैं
अपनी खुद की कार छोड़, बस के पीछे भाग रहे हैं।
मैं लोगों को तड़क भड़क से खींच

सादगी सिखाती हूँ
टैरीलीन के शौकीनों को
लट्ठा पहनाती हूँ।
माया जीवन का बंधन है, रूपया पैसा मैल हाथ का
मैं वेतन भोगी लोगों के
बंधन दो दिन में हर लेती
शीघ्र छुड़ाकर मैल हाथ का
शीशे सा निर्मल कर देती।

नीति ग्रंथ लिखने वालों ने, कम खाना या गम खाना अच्छा बतलाया,
मैंने उनका कथन निभाया
जितनी चीजें महँगी होंगी
उतना ही जन कम खाएँगे
जिस दिन रोटी नहीं मिलेगी
उस दिन खुद ही कम खाएँगे।

शुक्ल पक्ष की चाँद सरीखी बढ़ती हूँ मैं
खूब चाँदनी फैलाऊँगी
अभी दूज तक ही आई हूँ
पूरणमासी तक जाऊँगी

करो कल्पना जब भारत जन।
कितने सुंदर दिखा करेंगे,
गेहूँ, चावल, चना ,बाजरा
जब पुड़ियों में बिका करेंगे।
बीमारों को दूध, दही,घी के
इंजेक्शन लगा करेंगे।
कैसा मधुर जागरण होगा
लोग भूख से जगा करेंगे।

आतंकी हमला

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

13 दिसंबर 2001
संसद पे पाक आतंकी हमला
13 फरवरी 2014
संसद में भारतीय आतंकी हमला

शर्मसार हुई संसद
पर्चे फाड़े गए
नयी तहज़ीब के
झंडे गाड़े गए।

उड़ाया गया काली मिर्च का पाउडर
स्पीकर का नहीं सुना आर्डर।
आँखें जलने लगीं
सांसें फूलने लगी
संसद पर नंगी तलवार
झूलने लगी।

घायल हुआ प्रजातंत्र और संविधान
मंदिर के पुजारियों ने किया मंदिर का अपमान
ऐसे आतंकियों को सबक सिखाना होगा
फिर नया इतिहास बनाना होगा।

बाल-श्रम

(वाइ.के.राकेश कुमार, खलासी)

बालपन की किलकारी
धूप के ताप से हुआ मूक,
पोथी छोड़ी कुदाल खोदते
हाथ की मार अचूक।
कीचड़, आंधी में श्रम
करना हुआ मजबूरी,
गरीबी की पराकाष्ठा पेट
और पीठ की घटती दूरी।
कुछ धनहीनता और कुछ
माता-पिता की मूर्खता,
किन्तु, सबसे ज्यादा स्वार्थी
समाज की संवेदनहीनता।
जिसने बालक को श्रमिक
बनने को बाध्य किया,
लेखनी को छीनकर
कोमल हाथों में छड़ी पकड़ायी।

गाय-बकरी की सेवा करता

बाल्य-जीवन कुरूप,

अपने भविष्य को दरिद्र करता

अज्ञान और अबूझ विद्योपार्जन

की किसको है फुर्सत ?

स्थिति तो ऐसी हुई,

दो दाने अन्न के लिये बालपन

चोर बनने को आतुर हुआ।

दोस्ती

(चिन्ना कोंडैय्या, खलासी)

गुलाब एक फूल है।
एक घन्टे में मुरझा जाता है।
पर दोस्ती एक शक्ति है।
कभी भी जीवित रहती है।
बरफ ठंडी होती है।
जो पकड़ में नहीं आती है।
दोस्ती सोने जैसी है।
जो कभी कोई नहीं खरीद सकते हैं।
तारे के पाँच अन्त (END) हैं।
चौकोन के चार अन्त है।
तीकोन के तीन अन्त हैं।
एक रेखा का एक अन्त है।
पर दोस्ती का कोई अन्त नहीं है।

मेरे जीवन का उद्देश्य

(कुमारी श्रिया, सातवीं कक्षा, सुपुत्री एम. सबीता, उ.श्रे.लि)

ब्रेकिंग न्यूज भारत का खतरा, पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला किया है।

कुछ दिन बाद .... ब्रेकिंग न्यूज पाकिस्तान के खिलाफ भारत की रक्षा करते हुए, वीर सैनिकों का भारी नुकसान।

इन खबरों ने भारत को हिला दिया था। मैं भी सोच में पड़ गयी कि मैं भारत के लिए क्या कर सकता हूँ भारत को इन हमलों से कैसे बचा सकता हूँ ? मेरे मन में सिर्फ एक ही खयाल आया कि भारतीय सेना का एक जवान सिपाही बनूँ।

जव मैंने यह बात अपने दोस्त से कही तो उसने कहा कि सिपाही बनना खतरे से खाली नहीं है, और परिवार से दूर सरहदों पर खतरों से भरे जीवन मेरे लिए कष्टप्रद होगा, लेकिन मैंने ठान लिया था कि मैं कुछ ऐसा करूँगी कि पूरे देश में मेरा नाम हो जिसे देखकर मेरे अपनों का सिर गर्व से ऊँचा हो जाए।

मेरे निश्चय को सुनकर मेरी माँ रोने लगी, मुझे प्रलोभन दिया कि मैं व्यापार करूँ। मेरे दोस्त ने मुझे डाक्टर बनने का सुझाव दिया पर मैंने सोचा कि भारत में कई डाक्टर हैं , व्यापारी हैं। भारत को डाक्टर या व्यापारी की नहीं बल्कि सैनिकों की जरूरत है।

मैं भारत के लिए अपनी जान भी देने के लिए तैयार हूँ। मैंने सोचा सब अपने परिवार को सुरक्षित रखना चाहते हैं फिर भारत - भूमि तो मेरी माँ है, मेरी ही क्यों ? हर एक की माँ है, तो हम सब का कर्तव्य बनता है कि हम इसकी रक्षा करें। इसीलिए मेरे जीवन का उद्देश्य है कि मैं एक सिपाही बनूँ और भारत की सेवा करूँ।

मूर्ख मित्र से समझदार शत्रु अच्छा होता है।

(मास्टर सनीत, चौथी कक्षा, सुपुत्र एम. सबीता, उ.श्रे.लि)

एक दिन मैं और मेरा सबसे अच्छा मित्र रवि बैठे यह सोच रहे थे कि हमें परीक्षा के लिए अभी से पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए या नहीं। रवि ने तपाक से कहा कि अभी से पढने से कोई लाभ नहीं होगा , अगर हम परीक्षा के एक दिन पहले पढ़ेंगे तो ज्यादा दिमाग में रहेगा , तभी वहाँ से मेरी कक्षा का दूसरा छात्र रमेश गुजर रहा था। मुझे रमेश बिलकुल पसंद नही था और रमेश भी मुझे पसंद नहीं करता था , बात-बात पर हम लड़ाई करते थे पर पढ़ाई में वह मुझसे बहुत अच्छा था। उसने हमारी बात सुन ली थी

इसलिए धीरे स्वर में मुझसे बोला, अपने मूर्ख मित्र की बातें मत सुनो, बस रोज मेरी तरह थोड़ा-थोड़ा पढ़ो। लेकिन मैंने उसकी बात पर कान नहीं धरा। एक महीने बाद परीक्षा के दिन आ पहुँचे परीक्षा के एक दिन पहले जब मैनें पढ़ना शुरू किया तब पाया कि पढ़ने को बहुत था, पर समय कम था। जैसे -तैसे पढ़ कर मैनें परीक्षाएँ लिखी और उम्मीद करता रहा कि मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकूँ। कुछ दिनों बाद परीक्षा का परिणाम निकला और वही हुआ जिसका डर था , मैं और मित्र रवि अनुत्तीर्ण हो गए ।दूसरी ओर रमेश बहुत अच्छे अंको से उत्तीर्ण हुआ। उस दिन मुझे समझ आ गया कि मूर्ख मित्र से समझदार शत्रु अच्छा होता है।

भविष्य की पढ़ाई

(मास्टर शिव कल्याण, सातवीं कक्षा, सुपुत्र वल्लि कल्याणी, उ.श्रे.लि.)

आज जब हम पढ़ाई या स्कूल के बारे में सोचते हैं तो नजरो में एक भारी बैग उठाता हुआ छात्र दिखता है। किताबों के बिना हम स्कूल जाने की सोच भी नहीं सकते, किताबों के साथ कंप्यूटर भी पढ़ाई का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

कुछ साल बाद, भारी किताबों से भरे बैग के बदले छात्रों के हाथों मे टैबलेट होगा। आकाश टैबलेट एक ऐसा यंत्र है जिसमें हम तरह-तरह की किताबें पढ़ सकते हैं। हम कक्षा में ही नेट से जानकारी पा सकते हैं। टैबलेट फोन से बड़ा है और ज्यादा महँगा भी नहीं। हम इसे कहीं भी ले जाकर इसमें किताबें पढ़ सकते हैं। हम इसमें कक्षा का दिया गया कार्य भी कर सकते हैं। यह टैबलेट पढ़ाई का अंदाज बदल देगा और पढ़ाई को मजेदार बना देगा।

पानी और धूप

(कुमारी एस. सानिया, पांचवी कक्षा, सुपुत्री रजिया बेगम, अ.श्रे.लि)

अभी-अभी थी धूप, बरसने
लगा कहाँ से यह पानी ?
किसने फोड़ बादल को
की है इतनी शैतानी ?

सूरज ने क्यों बंद कर लिया।
अपने घर का दरवाज़ा?
उसकी माँ ने भी क्या उसको
बुला लिया कहकर आजा ?

ज़ोर-ज़ोर से गरज़ रहे हैं
बादल हैं किसके काका ?
किसको डाँट रहे हैं, किसने
कहना नहीं सुना माँ का ?

परीक्षा

(कुमारी शेख रजिया सुलताना, ग्यारहवीं कक्षा, सुपुत्री शेख मेहबुब पीरा, पटल चित्रक)

जिस नाम को सुनने से काँपता है बच्चा,
वो है परीक्षा।
परीक्षा पेपर हाथ में आते ही
इतना डर लगता कि यदि अच्छा नहीं किया तो पिटना पक्का।
तीन घंटे में लगभग करने होते हैं चालीस सवाल
एक भी छूटा तो घर में आता है भवंडर।
रिजल्ट के एक दिन पहले
रात को नींद नहीं आती है।
अच्छे नंबर पाने के लिए,
भगवान की याद आती है।
पास होने पर मिलता है इनाम,
और मुख से निकलता है,
"थैंक्यू भगवान ! "।
फिर आती है अगली कक्षा
तब भी मुख से निकलता है
हाय रे ! आ गयी फिर से परीक्षा !!

राष्ट्रीय साक्षरता

(मास्टर शेख समीर, छठी कक्षा, सुपुत्र शेख मेहबुब पीरा, पटल चित्रक)

प्रतिदिन सीखो अक्षर एक
            नियम बना लो ऐसा।
पढ़ो, पढ़ाओ, सीखो ज्ञान
            तभी बनेगा देश महान।
विद्या सच्चा ज्ञान कराती
            मन का अंधेरा दूर भगाती।
जहाँ पर बनते लोग ज्ञानी।
            वहाँ न होती मन की हानि।
अनपढ़ के लिए गूँगी पोथी
            धन दौलत भी होती थोथी।
पढ़ा लिखा नहीं धोखा खाता,
            जहाँ भी जाता आदर पाता।

माँ

(मास्टर शेख मेहबुब बाशा, आठवीं कक्षा, सुपुत्र शेख मेहबुब पीरा, पटल चित्रक)

सबसे सुन्दर जग में कौन?
बस एक तू है माँ।
      सबसे प्यारी किसकी मुस्कान?
      बस एक तेरी ही है माँ।
किसने बनायी मेरी पहचान ?
तूने ही तो मेरी प्यारी माँ।
      किसकी बोली मिश्री से मीठी,
      तेरी ही है मेरी माँ।
किसकी डाँट है इमली से तीखी
तेरी ही तो प्यारी माँ।
      किसके लिए करूँ मैं सब कुर्बान,
      तेरे लिए मेरी प्यारी माँ।

तितली

(कुमारी एम. रिशिका शिवानी, पांचवी कक्षा, सुपुत्री एम. लक्ष्मण कुमार, उ.श्रे.लि.)

तितली तुम कितनी,
रंग-बिरंगी होती हो।
तुम सब फूलों का रस पी-पीकर,
बाग-बगीचों में फिरती रहती हो।
तेरे पंख कई रंगों के होते हैं।
तुम्हारे रूप को देखकर,
बच्चे बहुत खुश होते हैं ।

मेरी कक्षा

(कुमारी एम. रिशिका शिवानी, पांचवी कक्षा, सुपुत्री एम. लक्ष्मण कुमार, उ.श्रे.लि.)

मेरी कक्षा में हैं पचास बच्चे,
हर एक है अलग-अलग जैसे
एक है लंबा, एक है छोटा, एक है मोटा,
एक है पतला, कुछ हैं अच्छे,
कुछ हैं बुरे, पर लगते हैं सारे प्यारे
मेरी कक्षा है रंग- बिरंगी
लगती है, तितलियों का झुंड है
मुझे बहुत पसंद है, क्योंकि यह हमारी कक्षा है ।

"आपको मानवता पर विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता तो एक समुद्र है; अगर समुद्र की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो पूरा समुद्र गंदा नहीं हो जाता।"

---------*महात्मा गांधी*--------